Year 9, Issue March 2023

DEFENDER
डिफेन्डर
पहल भारत निर्माण की

March 2023
Rs. 30/-

अमृतकाल का सप्तऋषि बजट

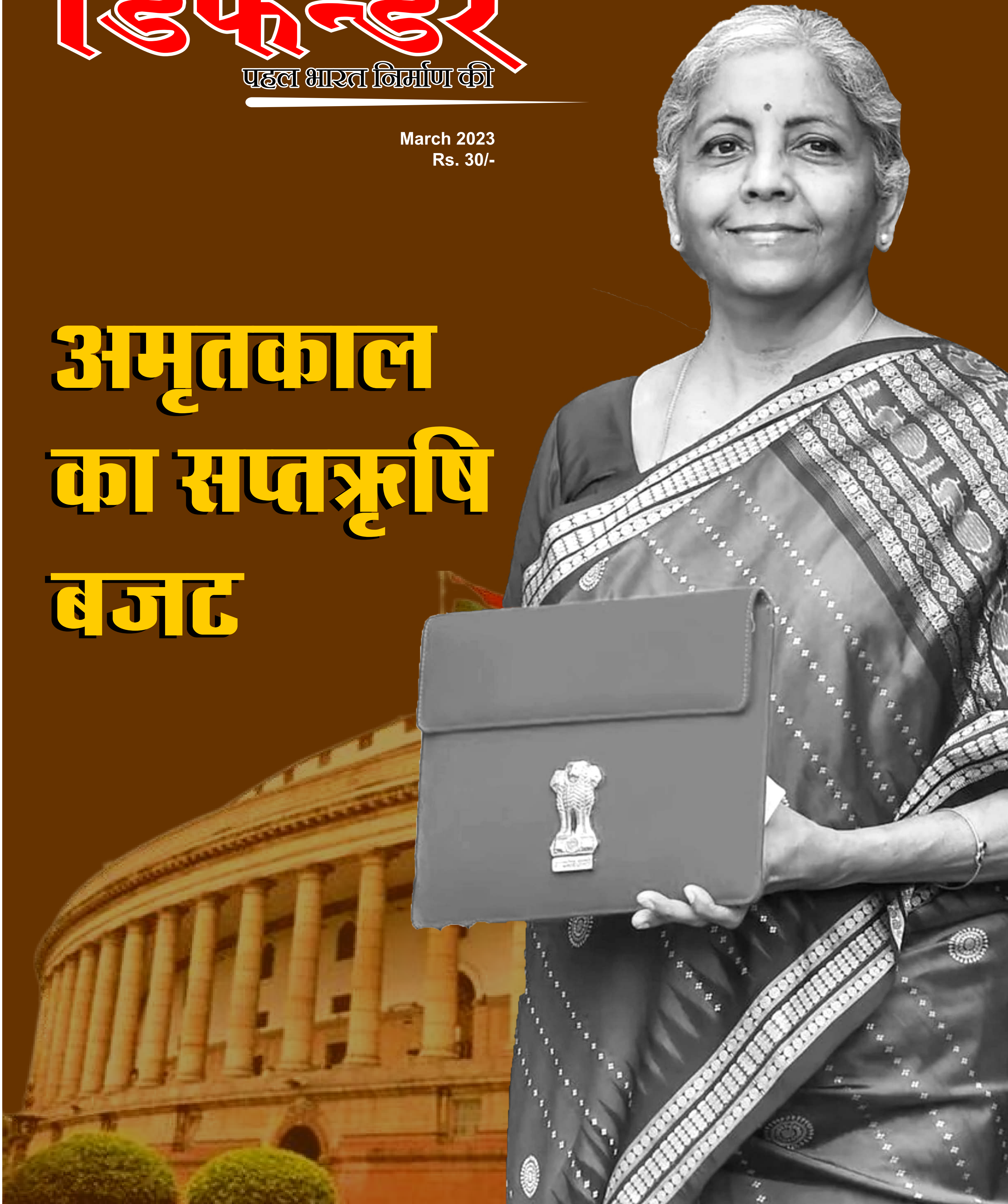

संपादकीय

भारत, जहाँ 130 करोड़ लोगों के द्वारा किसी न किसी प्रकार से कर अदा किया जाता है। तो उन लोगों का यह अधिकार है कि उन्हें इस बात की जानकारी मिले की आखिर उनके द्वारा कर के रूप में दिया गया पैसा कहाँ खर्च हो रहा है या होगा? केंद्र व राज्य सरकारें इन्हीं वजहों से आर्थिक सर्वेक्षण और बजट हर वर्ष लाती है। बजट में कई बार आम लोगों के लिए कई योजनाओं की घोषणा होती है तो कई दफ़ा कर के दरों को कम किया जाता है। हालांकि जब से जीएसटी लागू किया गया है तब से आम आदमी की रुचि बजट में कम हो गई है क्योंकि मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी चीज़ों के मूल्यों को घटाने या बढ़ाने का कार्य जीएसटी कमेटी करती है। रेलवे से जुड़ा बजट भी अब एकसाथ ही वित्त मंत्री के द्वारा घोषित किया जाता है। लेकिन प्रत्यक्ष कर के दरों पर आज भी नज़र सबकी रहती है। खास कर नौकरीपेशा लोगों और मध्यम वर्गीय परिवारों की।

साल 2023-24 के लिए लाया गया बजट मोदी सरकार 2.0 का आखिरी पूर्ण बजट था। इसलिए सबकी उम्मीदें इस बजट से काफी ज्यादा थी। लेकिन जैसा पिछले 9 वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार के बजट की रूपरेखा या आसान शब्दों में कहे तो नज़रिया रहा है, वो इस साल के बजट में भी देखना को मिला है। मोदी सरकार के द्वारा इंफ्रास्ट्रक्चर पर इस बजट में काफी ध्यान दिया गया है। प्रधानमंत्री गतिशक्ति मास्टर प्लान के तहत सरकार की नीति इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में क्या हैं, उन्होंने पहले ही साफ कर दिया है। इसके अलावा प्रधानमंत्री आवास योजना के बजट में 66% की बढ़ोत्तरी की गई है। छोटे कारोबारियों और युवाओं को स्टार्टअप खोलने पर सरकार से मदद करने की भी बात इस बजट में कही गई है। इसके अलावा इलेक्ट्रिक गाड़ियों को बढ़ावा देने के लिए दामों को कम किया है। तो "गोबरधन योजना" के द्वारा गांवों के लोगों का भी ध्यान रखा गया है। अमृतकाल के इस बजट में सात प्राथमिकताएं तय किया गया है। जिसमें समावेशी विकास, अंतिम छोर तक पहुंचना, युवा शक्ति, वित्तीय क्षेत्र, हरित विकास क्षमता उभारना और अवसंरचना और निवेश जैसे क्षेत्र शामिल हैं। वित्त मंत्री ने इन सात प्राथमिकताओं को "सप्तऋषि" नाम दिया है।

वित्तीय वर्ष के लिये लाया गया बजट को देखकर यह नहीं लगता है कि यह कोई चुनावी बजट है। इस साल 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होना है और अगले साल लोकसभा चुनाव। लेकिन सरकार ने ऐसी कोई भी बड़ी घोषणा नहीं कि है, जिससे इस बजट को प्री चुनावी बजट कहा जाए। हाँ, प्रत्यक्ष कर के दरों में काफी राहत दी गई है लेकिन पिछले कई वर्षों से इनकम टैक्स के दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया था। जहाँ पहले पाँच लाख तक के कमाई करने वाले लोगों को टैक्स से छूट मिलती थी, अब उसे बढ़ा कर सात लाख कर दिया गया है। इस घोषणा से जरूर नौकरीपेशा लोगों और खास कर मध्यम वर्गीय परिवारों ने राहत की सांस ली होगी। क्योंकि लंबे समय से कर के दरों में कोई भी बदलाव नहीं किया गया था।

हालांकि कुछ कमियां भी इस बजट में देखने को मिली है। जैसे कि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है। वित्त मंत्री ने जरूर एकलव्य विद्यालय में शिक्षकों की भर्ती का जिक्र बजट भाषण में किया है। साथ ही नए 157 नर्सिंग कॉलेज खोलने की भी घोषणा जरूर हुई है। लेकिन भारत के शिक्षा और स्वास्थ्य में जैसे बूस्ट चाहिए, वैसा सरकार के द्वारा नहीं दिया गया है। हालांकि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण में कहा कि साल 2014 से अबतक देश में प्रति व्यक्ति आय दोगुनी होकर 1.97 लाख रुपया हो गई है। साथ ही किसान सम्मान निधि के तहत 11.4 करोड़ किसानों को 2.2 लाख करोड़ रुपया दिया गया है। इस साल आये बजट में यह आशंका जताई जा रही थी, की शायद किसान सम्मान निधि के द्वारा मिलने वाले राशि में बढ़ोतरी किया जाएगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

"डिफेंडर" के इस अंश के आवरण कथा में बजट को आसान भाषा में समझाने की कोशिश की गई है। साथ ही बजट का निर्माण क्यों और कैसे किया जाता है, इसपे भी ध्यान जाना आवश्यक है। साथ ही इस अंश में शहीदी दिवस पर खास लेख शहीद भगत सिंह पर पढ़ने को मिलेगा। वहीं पठान फ़िल्म के विवादों से सफलता तक कि कहानी भी आपको इस अंश में मिलेगी।

—————— धनंजय कुमार सिंह

Dr.AXICO
Way To Wellness
आपका अपना
आयुर्वेदिक क्लिनिक

DEFENDER
मासिक पत्रिका
RNI No.-DELMUL/2014/58060. Year 9,Issue March 2023
Postal Regd. No. DL(W)10/2227/2016-18

हाँ, लेखनी! हृत्पत्र पर लिखनी तुझे है यह कथा,
दृक्कालिमा में डूबकर तैयार होकर सर्वथा।
स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़ें प्रस्ताव जो,
जग जायें तेरी नोंक से सोये हुए हों भाव जो।

-मैथिलीशरण गुप्त

जन मीडिया पब्लि, प्रा. लि. द्वारा प्रकाशित सभी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हमारा एक ही उद्देश्य है कि लेखनी से देश जागत हो और इसका गौरवशाली निर्माण के साथ भारत पुनः विश्व गुरू बने। लेखन के दौरान कभी कोई कटु शब्द भी कागज पर उधृत हो जाता है, इसका आशय किसी को आहत करना नहीं बल्कि उसको जगाना है। हमारा प्रयास रहता है कि हम पत्रकारिता की गरिमा को बनाए रखते हुए समाज के निर्माण में सदैव एक स्वस्थ योगदान देते रहें।

धनंजय कुमार सिंह
प्रधान संपादक

प्रधान संपादक
धनंजय कुमार सिंह
संपादक
प्रेरणा अग्रवाल
साहित्य संपादक
संतोष कुमार
प्रबंध संपादक
डा. अजय सिन्हा
विधि संपादक
सुश्री चंचल
लेखिका
प्रियंका सिंह, शुभम राजा
ग्राफ़िक डिजाइनर
नितेश कुमार राठौर
वितरण- रोहित जोशी

ब्यूरो चीफ

दिल्ली
अनुज तिवारी
हरियाणा
रविश कुमार
राजस्थान
शैलेन्द्र चौहान
उत्तर प्रदेश
अमित त्यागी, संदीप चंद्र, अशोक कु. सिंह
बिहार
संजय कुमार सिंह
रत्नाकर मिश्रा, बिजेंद्र सिंह
झारखण्ड
राजेश पांडेय
उत्तराखंड
मनोज सिंह
गुजरात
शैलेश भाई पटेल, रामचंद्र केशवला
महाराष्ट्र
नवल किशोर
कोलकाता
रंजित बोस
जम्मू एवं कश्मीर
नरेश शर्मा, अमरनाथ शर्मा
केरल
के. एम. मणी
हिमाचल प्रदेश
रमन सनोरिया, विजय कुमार राणा

सभी कानूनी विवादों का क्षेत्राधिकार दिल्ली न्यायालय के अधीन होगा किसी भी लेख एवं सामग्री लेखकों के स्वयं के है। इससे प्रकाशक व संपादक की सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुख्य कार्यालय : 29/2, विजय एन्कलेव, डाबरी पालम रोड़, नई दिल्ली-110045
TEL: +91 9971999976 E-MAIL : janmedia.in@gmail.com WEBSITE : janmedia.in
FACEBOOK : www.facebook.com / Nation Live TWITTER : @nationlive
YOUTUBE : www.youtube.com / Nation Live IPTV INSTAGRAM : @nation_live_
Jan Media Publication Pvt. Ltd.
JAN MEDIA · NATION Live खबरों की खबर · JhelamExpress NATIONAL NEWSPAPER

स्वामित्वधिकारी- Janmedia Publication Pvt. Ltd. प्रकाशन व मुद्रक धनंजय कुमार सिंह द्वारा एशियन प्रिन्टवेल हाउस न. 240 नवादा नई दिल्ली से मुद्रित तथा WZ-30 वशिष्ठ पार्क सागरपुर से प्रकाशित।

LEARN
MORE...

S. B. PRAKASHAN

About S.B. Prakashan

At S.B. Prakashan Pvt. Ltd., we are currently dealing with Textbooks and course books of grades 1st to 8th. We are associated with a larger group of M.S. Group of Companies, which is having its root in various other educational fields as well. Each year, we are growing as a company. We are making our name in one of the leading publication houses in the current market. Our books go through a careful examination and it is made sure that only standardised and quality content is published in our textbooks to provide students with the best of knowledge. We deal with various school boards and their syllabus for every subject. We have a prestigious batch of authors who work with top educational institutes. We cover not only North India but also deal with central and are looking forward to expanding further. We aim to provide the best quality material.

S. B. PRAKASHAN

Book for your better Learning...

Contact : +91 920-547-6295
Mail : info@sbprakashan.com

DEFENDER
डिफेन्डर
पहल भारत निर्माण की

प्रमुख प्रकाश

राजनीती

07 त्रिपुरा में फिर भगवा बनाम लाल!

08 नागालैंड में क्या इस बार होगा विपक्ष?

शिक्षा

14 "पेपर लीक" पर पाबंदी कब?

16 "पेपर लीक" के आंकड़े

विशेष

09 श्राप मुक्त!

19 कैसा सिला दिया देशभक्ति का...

25 सनातन प्रचारिता को दिया पाखंड का नाम

मनोरंजन

35 Bollywood तड़का

आवरण कथा

21 सबका साथ सबका विकास वाला बजट

22 सात प्राथमिकताएं

23 नए आयकर का दर

24 बजट निर्माण कैसे और क्यों ?

लेख

12 वो क्रांतिकारी जो हाथों में गीता लेकर फाँसी पर चढ़ा

28 महिला क्रिकेट की पहल

31 2024 में दिखेगी विपक्षी एकता?

17 मार्च राशिफल

Photo. भाजपा कार्यालय

तीन राज्यों में चुनाव

भारत में इस साल चुनावी माहौल रहने वाला है। लोकसभा चुनाव में मात्र अब एक साल बचा हुआ हैं। इससे पहले कुल नौ राज्यों में विधानसभा चुनाव होना है। आशंका यह भी जताया जा रहा कि इसी साल के अंत तक जम्मू-कश्मीर में भी चुनाव हो सकता है। जिन नौ राज्यों में विधानसभा होना है, उनमें त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, मिज़ोरम और तेलंगाना हैं। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले, इन चुनावों को निर्णायक माना जा रहा है। फरवरी महीने के अंत तक तीन राज्यों में विधानसभा चुनाव होना है, जिसमें त्रिपुरा, मेघालय और नागालैंड शामिल है। पूर्वोत्तर के इन तीनों प्रदेशों की राजनीति आमतौर पर देश के अन्य हिस्सों से अलग माना जाता है। त्रिपुरा को छोड़ दे तो बाकी के दो राज्यों में स्थानीय दलों का अधिक प्रभुत्व देखने को मिलता है। त्रिपुरा में भाजपा जहाँ अपने दम पर सरकार चला रही है तो वहीं मेघालय और नागालैंड सरकार में भाजपा गठबंधन के साथी के रुप में काम कर रहा है। नागालैंड में तो स्थिति ऐसी हो गई है कि वहाँ वर्तमान में कोई भी विपक्ष नहीं है। तीनों राज्यों के विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए तो ख़ास है ही, वहीं यह चुनाव कांग्रेस और साथ ही विपक्ष के लिए काफी अहम होने वाला है। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में विपक्षी गठबंधन बनाने कि चर्चा इस वक़्त काफी ज़ोरों पर है तो माना जा रहा है की इन विधानसभा चुनावों में विपक्षी एकता का झलक देखने को मिल सकता है।इन तीनों राज्यों में विधानसभा सीटों कि संख्या 60 है। यानी कि सरकार बनाने के लिए तीनों राज्यों में ही 31 सीटों की आवश्यकता होती हैं। त्रिपुरा में इस वक़्त सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पास 36, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के पास 16 और इंडिजेनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा (आईपीएफटी) के पास 08 सीटें हैं। इस चुनाव में भाजपा और आईपीएफटी के बीच गठबंधन तय हो गया है। मुख्यमंत्री माणिक साहा ने इसकी घोषणा किया था। वहीं मेघालय में अभी भाजपा और नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) की साझा सरकार चल रही है। 2018 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सबसे अधिक 21 सीटें मिली थी, लेकिन भाजपा और एनपीपी ने साथ मिलकर सरकार बना लिया था। एनपीपी के कोनराड संगमा को मुख्यमंत्री बनाया गया था। लेकिन सबसे अलग राजनीतिक समीकरण नागालैंड की है। इस राज्य में विपक्ष नहीं है। यानि की सभी राजनीतिक दल सत्ता में हैं। नागालैंड में पिछले पाँच सालों से नेफ्यू रीयो मुख्यमंत्री के पद पर आसीन हैं। ऐसा क्यों हुआ, ये आगे विस्तार से आपको बताएँगे। बता दें, त्रिपुरा में 16 फ़रवरी, मेघालय और नागालैंड में 27 फ़रवरी में मतदान होना है। 2 फ़रवरी को एकसाथ तीनों राज्यों में यह साफ़ हो जाएगा की किसकी सरकार सत्ता में बैठेगी।

किस्मत दाँव पर

- माणिक साहा (भाजपा)
  मुख्यमंत्री त्रिपुरा
- माणिक सरकार (सीपीआई एम)
  पूर्व मुख्यमंत्री त्रिपुरा
- नेफ्यू रियो (एनडीपीपी)
  मुख्यमंत्री नागालैंड
- कॉनराड संगमा (एन पी पी)
  मुख्यमंत्री मेघालय
- मुकुल संगमा (टीएमसी)
  पूर्व मुख्यमंत्री मेघालय

त्रिपुरा में फिर भगवा बनाम लाल!

25 सालों के लम्बें शासन के बाद आख़िरकार 2018 में वामपंथ का अभेद किला माने जाने वाला त्रिपुरा भी हाथ से निकल गया। वर्षों कि मेहनत और सत्ता विरोधी लहर को सीढ़ी बना कर भाजपा ने इस अभेद किलें को जीत लिया। भाजपा ने 2018 में 51 सीटों पर चुनाव लड़कर 36 सीटों पर जीत दर्ज किया था, वहीं गठबंधन में साथी इंडिजेनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा ने 09 सीटों पर लड़कर 08 सीटों पर फ़तह हासिल किया था। विप्लव देव को मुख्यमंत्री बनाया गया। लेकिन उन्होंने कार्यकाल पूरा होने से पहले ही इस्तीफा दे दिया था। उस वक्त राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा तेज़ थी कि सरकार चलाने में असमर्थ होने के कारण केन्द्रीय नेतृत्व ने उन्हें उनके पद से हटने का निर्देश दिया था। विप्लव देव के इस्तीफे के बाद माणिक साह को त्रिपुरा का नया मुख्यमंत्री बनाया गया और यह साफ हो गया है कि आगामी विधानसभा चुनाव भी एनडीए, माणिक साह के ही नेतृत्व में लड़ेगा। पिछले चुनाव के वोट प्रतिशत पर अगर हम एक नज़र डाले, तो यह साफ देखने को मिलता है कि भाजपा और वामपंथी दल के बीच अधिक अंतर नहीं है। भाजपा को साल 2018 में 43.59% और उनके गठबंधन साथी इंडिजेनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा को 7.5% मत प्राप्त हुए थे। वहीं विपक्षी दल सीपीआई(एम) को 42.22% मत प्राप्त हुए थे। अगर हम वोटों के संख्या कि बात करें तो भाजपा को 1,025,673 और आईपीएफटी को 1,73,603 मत मिले थे। वहीं सीपीआई को 9,92,575 मत प्राप्त हुए थे। हालांकि देश के मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने भी 59 सीटों पर चुनाव ज़रुर लड़ा था, लेकिन एक भी सीट जीत नहीं पाई। आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा जहाँ त्रिपुरा में वापस सत्ता में आने का प्रयास करेगी, वहीं वामपंथ अपने खोए गढ़ को फिर से वापस पाने का प्रयास करेगी। हालाँकि सीपीआई के लिए इतना आसान नहीं रहने वाला है, क्योंकि तृणमुल कांग्रेस भी त्रिपुरा चुनाव में पुरा ताकत झोंक रही है। ममता बनर्जी समेत 37 नेताओं को स्टार प्रचारक बनाया गया है। पिछले चुनाव में टीएमसी को मात्र 0.3% मत प्राप्त हुए थे, लेकिन इस चुनाव में पार्टी के द्वारा पूरी ताकत से प्रचार किया जा रहा है। और इसका नुक़सान सीपीआई को ही उठाना पड़ सकता है।

"त्रिपुरा के कर्मठ मुख्यमंत्री डॉ. माणिक साहा जी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। उनकी विनम्रता और कड़ी मेहनत के लिए उनका सम्मान किया जाता है और वह त्रिपुरा की प्रगति के लिए कई प्रयास कर रहे हैं। उनके लंबे और स्वस्थ जीवन की प्रार्थना कर रहे हैं।"

- नरेंद्र मोदी

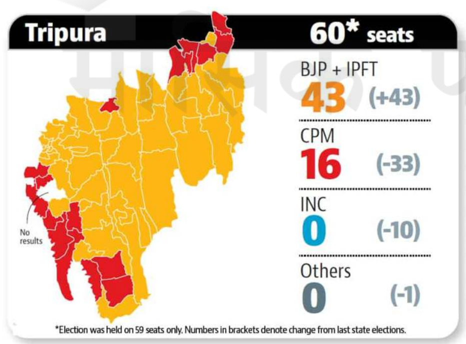

मेघालय में त्रिकोणीय संग्राम

मेघालय की चुनावी जंग अब त्रिकोणीय होता दिख रहा है। 2017 विधानसभा चुनाव में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभड़ी थी, लेकिन राज्य में एनपीपी और भाजपा की संयुक्त सरकार ने पाँच वर्षों तक शासन चलाया। 2023 विधानसभा चुनाव में राज्य का राजनीतिक समीकरण पूरी तरह से बदल चुका है। भाजपा ने अकेले चुनावी रण में उतरने का फैसला लिया है। हालांकि, पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को 9.6% मत और मात्र 2 सीट ही मिली थी। लेकिन पिछले पाँच वर्षों से सत्ता में रहने के बाद भाजपा ने अपने संगठन को मजबूत किया है। इसके अलावा केंद्रीय योजनाओं को वहाँ के लोगों तक पहुंचाने में भी कामयाबी प्राप्त मिली है। इन्हीं सब मुद्दों को लेकर भाजपा लोगों तक पहुँच रही है। वहीं, कांग्रेस भी पिछली बार जैसी गलती दोहराने से बच रही है। कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता लगातार लोगों के पास पहुँच रहे हैं। पिछली बार कांग्रेस को 21 सीटों पर जीत मिली थी, लेकिन वो गठबंधन बनाने में असफल रहे थे। इसी का फायदा उठाकर 2018 में 2 निर्दलीय सहित 5 दलों के द्वारा एनपीपी के नेता कौनराड संगमा के नेतृत्व में सरकार बनाई गई थी। लेकिन इस बार

एनपीपी, भाजपा और कांग्रेस के अलावा ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस भी चुनाव में पूरे जोर के साथ उतरी हैं। पिछले चुनाव में तृणमूल कांग्रेस को मात्र 0.4% मत प्राप्त हुए थे। वहीं, एनपीपी के पास वर्तमान में अभी 20 सीटों पर कब्ज़ा हैं और कांग्रेस से सीधा टक्कर ले रही है। पिछले चुनाव में आम आदमी पार्टी ने भी 8 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन अभी तक आम आदमी पार्टी के द्वारा चुनाव में सक्रियता नहीं दिख रही है।

बीच!

नागालैंड में क्या इस बार होगा विपक्ष?

नागालैंड की राजनीति को देश में सबसे अलग माना जाता है। शायद ही भारत में कोई ऐसा राज्य होगा, जहाँ विपक्ष में कोई भी पार्टी नहीं होगी। जी हाँ, नागालैंड में साल 2020 में मुख्य विपक्षी पार्टी एपीएफ ने अपने सभी 26 विधायकों के साथ नेफ्यू रियो की पार्टी एनडीपीपी में विलय कर गई थी। राज्य में पिछले पाँच वर्षों से भाजपा और एनडीपीपी गठबंधन की सरकार चल रही है। 2018 विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 20 में 12 सीटों पर जीत दर्ज किया था। वहीं उनके गठबंधन के साथी एनडीपीपी ने 40 में से 18 सीटों पर जीत दर्ज किया था। आगामी विधानसभा चुनाव में भी भाजपा और एनडीपीपी के बीच 20:40 सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला हुआ है। देश की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस नागालैंड से साफ हो चुकी है। एक वक्त सत्ता में रहने वाली काँग्रेस को साल 2018 में मात्र 2% मत प्राप्त हुए थे। नागालैंड में दो मूल समस्या लंबे समय से चला आ रहा है, पहला तो नागा से संबंधित राजनीतिक विषय और दूसरा ग्रेटर नागालैंड या नागालिम बनाने की माँग। क्योंकि नागालैंड के 6 जिलों में रहने वाले 7 आदिवासी समूह के लोगों की फ्रंटियर नागालैंड बनाने की माँग रही है। क्योंकि इन इलाके को अब तक विकास कार्य से दूर रखा गया है। और क्षेत्रफल के हिसाब से देखे तो ये 6 जिले कुल के हिसाब से अधिक हैं। इसके अलावा नागालैंड में बेरोजगारी भी अहम मुद्दा माना जा रहा है। दूसरी तरफ भाजपा भी यह चाह रही है कि नागालैंड में वो सरकार का हिस्सा बना रहे क्योंकि गृह मंत्री अमित शाह के द्वारा नागा शांति समझौते को आगे बढ़ाया जा रहा है। वहीं, नागालैंड में लंबे समय से अलग झंडे और संविधान की माँग किया जा रहा है। 27 फरवरी को एक चरण में नागालैंड में वोट डाले जाने हैं और दो मार्च को यह तय होगा कि सरकार किसकी बनेगी। ■

—— शुभम राजा

> **"नागालैंड, मेघालय और त्रिपुरा में संयुक्त रूप से 62.8 लाख से अधिक मतदाता हैं, जिनमें 31.47 लाख महिला मतदाता, 97,000 मतदाता 80 साल से अधिक के हैं और 31,700 विकलांग मतदाता शामिल हैं।"**
>
> \- राजीव कुमार, मुख्य चुनाव आयुक्त

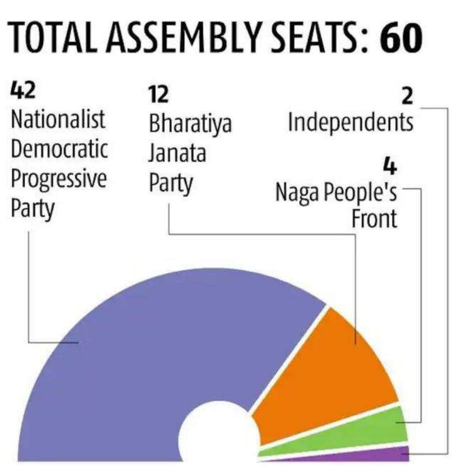

नागालैंड विधान सभा चुनाव 2018 परिणाम

- राधा रानी मंदिर

श्राप मुक्त !

हवाओं का रुख कुछ बदला-बदला सा है, आसमान के रंग भी बदले हुए है, चारों तरफ एक अलग सी रौनक, कहीं मिठाइयां तो कही अलग-अलग पकवानों की खुशबू। अरे! ये तो फ़ागुन का दिन है। जहां तक नजर जाती है हर तरफ लोगों के रंग बिरंगे गुलाल से भरे गाल है। घरों में बनते गुजिए साथ में लोगों की मुस्कान, एक अलग सा उमंग ला रही है। हर साल इस होली के पर्व को बड़ी ही धूम धाम से मनाया गया है, और साथ ही हिंदी कैलेंडर के अनुसार हमारे नए साल का सत्र फ़ागुन से ही शुरू होता है।

सनातन धर्म अक्सर अपने पुराण वेदों, कथाओं या फिर अपने धर्मिक मान्यताओं के लिए जाना जाता है। आज के समय में अन्य देश के लोग भी अपने धर्म की सरहाना करते है और इसे समझने की कोशिश करते कि आखिर ऐसा क्यूं है? हमारे सभी देवी या देवताओं की कोई ना कोई कथा या त्योहार के पीछे कोई ना कोई कहानी जरूर है। इसे लोग सदियों से ऐसे ही नहीं मानते आ रहे। इसके पीछे रहस्यों से भरी कहानी है, जिसे लोग आज भी जानने की कोशिश कर रहे हैं। जिनमें से हमें कुछ कथाओं या मान्यताओं के बारे में ज्ञात है, लेकिन कुछ से आज भी अनजान।

होली के इस पावन पर्व को मनाने की प्रथा कई वर्षो से चली आ रही है। और इसके पीछे की कथाओं तथा मान्यताओं को एक विशेष स्थान दिया गया है। इन कथाओं में लोगों को सिर्फ इतना पता है कि इस दिन हिरण्यकश्यप (एक अहंकारी राजा जिसने खुद को भगवान से ऊपर समझा) ने अपनी बहन (होलिका एक दैत्य वंशज जिसे अग्नि में ना जलने का वरदान प्राप्त था) को आदेश दिया कि वह उसके पुत्र प्रहलाद (नारायण भक्त) को लेकर अग्नि में बैठ जाए। और उसका विनाश कर दे। लेकिन प्रहलाद ने अपनी भक्ति को अपनी मृत्यु से ऊपर रखा और उनकी इस भक्ति की विजय हुई। उनकी बुआ होलिका उस अग्नि में जल कर मर गई और प्रहलाद बच गए। लेकिन लोगों को आज भी यह ज्ञात नहीं कि हिरण्यकश्यप (क्रूर राजा) जो खुद को सर्वश्रेष्ठ समझता था उसे एक श्राप मिला था। और भगवान विष्णु ही उसका वध (श्राप मुक्त) कर सकते थे।

हमारे आराध्य के कई रूप है , चाहे वह हमारी देवी हो या देवता। तो ऐसे ही हमारे भगवान विष्णु के कितने रूप या अवतार है यह शायद बहुत कम लोग जानते हैं। जिसमें बहुत से लोग भगवान विष्णु के प्रमुख 10 अवतारों के बारे में ही जानते हैं, लेकिन श्रीमद्भागवत में भगवान विष्णु के कुल 24 अवतार बताए गए हैं। आज हम आपको भगवान विष्णु के अवतार के बारे में बताएंगे कि ये अवतार आखिर उन्होंने क्यों लिए, तो चलिए जानते है ……

यह तो हम सभी जानते हैं कि भगवान विष्णु माँ लक्ष्मी के साथ वैकुण्ठ धाम में क्षीर सागर पर अपने शेषनाग पर विराजमान होते है। यही उनका निवास स्थान होता है तथा इसके द्वारपाल जय-विजय नाम के दो देवता होते है। चूंकि उनके ऊपर भगवान विष्णु के धाम के प्रहरी का भार होता है, इसलिये किसी को भी भगवान विष्णु से मिलने से पहले उनकी आज्ञा लेना आवश्यक होता है। किंतु एक समय ऐसा भी आया जब जय-विजय को भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्रों के द्वारा श्राप मिला जिसके कारण उन्हें तीन जन्म भगवान विष्णु के शत्रु के रूप में लेने पड़े। आज हम आपको उसी कथा के बारे में विस्तार से बताएंगे।भगवान ब्रह्मा के चार मानस पुत्र थे जिनके नाम सनक, सनंदन, सनातन व सनतकुमार थे। यह तीनों भगवान ब्रह्मा के विचारों से उत्पन्न हुए थे जिन्हें हम चार वेद भी कह सकते है। अपने तपोबल के कारण ये चारों आयु में बड़े होने के पश्चात भी यौवन दिखते थे।

एक दिन चारों भगवान विष्णु से मिलने उनके धाम वैकुण्ठ पहुंचे जहा उनकी भेंट जय-विजय से हुई। उन्होंने जय विजय से अंदर जाने का आग्रह किया लेकिन अपने अहंकार में चूर जय-विजय ने उन्हें अंदर नही जाने दिया। उन्होंने ब्रह्मा जी के चारों पुत्रों से कहा कि इस समय भगवान विष्णु विश्राम कर रहे है तथा अभी वे किसी से नही मिल सकते। इसलिये वे उनसे भेंट करने के लिए किसी और समय आये।

उनके इस व्यवहार से ब्रह्मा के चारों पुत्र रुष्ट हो गए तथा उनसे कहा कि श्रीहरि का कोई भी भक्त उनसे कभी भी मिल सकता है। अपने भक्तों के लिए भगवान विष्णु कभी व्यस्त नही होते। तुम लोगों ने अहंकार के बल पर हमें रोकने का प्रयास किया है। इसलिये हम तुम्हें श्राप देते हैं कि तुम इस लोक की बजाये पृथ्वी लोक में जन्म लोगे तथा एक सामान्य मनुष्य की भांति जीवन व्यतीत करोगे।

- भगवान विष्णु के द्वारपाल जाया-विजय

ब्रह्मा जी के चारों पुत्रों से मिले श्राप से जय-विजय में भय व्याप्त हो गया। उसी समय भगवान विष्णु भी अपने द्वार पर आ पहुंचे तथा संपूर्ण घटना का ज्ञान उन्हें हुआ। उन्होंने ब्रह्मा जी के चारों पुत्रों से अपने द्वारपालों के कृत्य के लिए क्षमा मांगी।

इसके पश्चात जय-विजय ने भी अपनी भूल के लिए क्षमा याचना की तथा भगवान विष्णु से आग्रह किया कि वे उन्हें श्राप से मुक्त करे। इस पर भगवान विष्णु ने कहा कि वे ब्रह्म वाक्य को असत्य नही करना चाहते इसलिये यह श्राप तुम्हें भोगना ही पड़ेगा।लेकिन अपने द्वारपालों की पीड़ा देखकर भगवान विष्णु ने उन्हें दो रास्ते दिए। उन्होंने जय-विजय से कहा कि तुम ब्रह्म पुत्रों से मिले श्राप स्वरुप इस पृथ्वी पर तो जन्म लोगे लेकिन तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं। प्रथम रास्ते के अनुसार तुम्हें इस पृथ्वी पर सात जन्म लेने पड़ेंगे जिसमें तुम मेरे भक्त होंगे तथा द्वितीय रास्ते के अनुसार तुम्हें इस पृथ्वी पर तीन जन्म लेने पड़ेंगे जिसमें तुम मेरे शत्रु होंगे।चूंकि जय-विजय भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे, इसलिये सात जन्मों का विग्रह उनसे सहा नही जाता। इसलिये उन्होंने भगवान विष्णु से अपने तीन जन्म शत्रु रूप में मांगे ताकि वे जल्द से जल्द वैकुण्ठ धाम में श्रीहरि के पास आ सके।

भगवान ब्रह्मा के पुत्रों से मिले श्राप के कारण हर युग में जय-विजय का दैत्य, दानव तथा असुर रूप में जन्म हुआ। हर युग में उनकी शक्ति कम होती गयी तथा हर युग में भगवान विष्णु ने उनका वध करने के लिए अवतार लिया। सतियुग में उनका जन्म हिरण्यकश्यप व हिरण्याक्ष के रूप में हुआ। भगवान विष्णु को दोनों का वध करने के लिए दो अलग-अलग अवतार लेने पड़े जो की नरसिंह तथा वराह अवतार के नाम से जाना जाता है।

इसके पश्चात त्रेता युग में दोनों का जन्म रावण तथा कुंभकरण के रूप में हुआ तथा इस युग में भगवान ने श्रीराम के रूप में अवतार लेकर दोनों का वध किया। श्रीराम अवतार का मुख्य उद्देश्य दोनों का वध करना ही था। अपने तीसरे जन्म में जय-विजय द्वापर युग में शिशुपाल तथा दंतवक्र के रूप में जन्मे। इस युग में भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया तथा दोनों का वध किया लेकिन इस युग में भगवान श्रीकृष्ण का उद्देश्य केवल इतना ही नही अपितु महाभारत में भी अहम भूमिका निभाना था।

इसके पश्चात जय-विजय का तीन जन्म पूर्ण हुआ और वह श्राप मुक्त होकर पुनः अपने धाम को लौट गए।

फ़ागुन के अनेक रंग

राधा का रंग और कान्हा की पिचकारी ,
प्यार के रंग से रंग दो दुनिया सारी,
ये रंग न जाने कोई जात न कोई बोली,
तो खुल के खेलो ये रंगों से भरी होली।

- धुलंडी होली

जब भगवान कृष्ण युवा थे, तो उन्होंने अपनी मां को राधा (उनकी मित्र) के गोरे होने के बारे में बताया। भगवान कृष्ण खुद सांवले रंग के थे। तो उनकी मां यशोदा ने उन्हें खेल के रूप में राधा को रंग लगाने को कहा। जिसके बाद कृष्ण अपने नंदगांव से राधा और अन्य गोपियों को रंगने के लिए बरसाना (राधा के गाँव) जाते थे। गोपियां भी उन्हें डंडों से पीटती थीं। इस वजह से होली के त्यौहार पर परंपरा विकसित हुई।

होली वैसे तो पूरे विश्व में मनाई जाती है लेकिन कान्हा की नगरी ब्रज की होली अपने ही आप में पूरे विश्व को समेटे हुए है। ब्रज ही एक ऐसा स्थान है जहां होली का पर्व 40 दिनों तक मनाया जाता है। ब्रज में होली केवल रंगों से ही नहीं होती है बल्कि यह पर्व यहां विभिन्न प्रकार से मनाने की मान्यता है और इसी के साथ यहां कृष्ण व राधा रानी की लीलाओं का आनंद भी लिया जाता है। इस पर्व को लेकर ब्रजवासियों के अंदर एक अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। ढोलक की थाप और मंजीरों की झनकारों के साथ ब्रज में रंगों की होली का आनंद लिया जाता है।

क्या आपको पता है कि ब्रज में रंगों के अलावा लड्डुओं की भी होली खेली जाती है! फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को बरसाने के श्रीजी मंदिर में लड्डुओं की होली खेली जाती है। श्रीजी लाड़ली मंदिर में लड्डुओं के साथ होली खेलने की परंपरा द्वापर युग से चली आ रही है। दरअसल राधा रानी के पिता वृषभानुजी ने होली खेलने का न्योता दिया था, जिसे कान्हा के पिता नंद बाबा ने स्वीकार कर लिया। नंद बाबा ने बरसाने में एक पुरोहित को पत्र लिखकर भेजा। पुरोहित का बरसाने में काफी स्वागत किया गया और थाली में लड्डू दिए गए। इसके बाद बरसाने की गोपियों ने पुरोहित को रंग लगाना शुरू कर दिया और पुरोहित ने लड्डू मारने शुरू कर दिए, तो बस इस दिन के बाद से लड्डू की होली भी ब्रज में खेली जानें की परंपरा शुरू हो गई।नंदगांव, बरसाना, मथुरा और वृंदावन में रंगों की होली के साथ-साथ लट्ठमार होली भी खेली जाती है। इस होली को देखने को लिए देश-विदेश से लाखों लोगों का हुजूम ब्रज में आता हैं और लठमार होली का आनंद लेता है। फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को राधारानी की नगरी बरसाने में लट्ठमार होली खेली जाती है। इस होली को खेलने के लिए नंदगांव के ग्वाल बाल राधा रानी के महल आते हैं और फिर बरसाने की सखियां ग्वालबालों के साथ लट्ठमार होली खेलती हैं। इसके बाद बरसाने के ग्वाल बाल नंदगांव जाते हैं, जिनको हुरियारे कहते हैं।

धुलेंडी का उत्सव (होली) 8 मार्च को मनाया जाएगा लेकिन मथुरा के रमणरेती में इसकी शुरुआत हो भी चुकी है। रमणरेती में कृष्ण और राधा रानी के भक्त फूलों की होली खेलते हैं। माना जाता है कि भगवान कृष्ण होली खेलने की शुरुआत इसी स्थान से करते थे। इसलिए ब्रज में होली का शुभारंभ रमणरेती में फूलों की होली के साथ किया जाता है। यहां कृष्ण और राधा को फूलों से पूरी तरह ढक दिया जाता है। वहीं हरियाणा राजस्थान समेत पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी बरसाने की तरह ही लठमार होली खेली जाती है, जिसे दुल्हंडी कहते हैं। इस होली में फर्क यह है कि यहां देवर-भाभी को रंगने की कोशिश करते हैं और बदले में भाभी देवर को दुपट्टे से बनाए गए कोड़े से पीटंती हैं।

—प्रियंका सिंह

- लड्डू की होली

Nation Live IPTV nationliveiptv nation_live_ Nation Live / Jhelam Express www.nationliveiptv.com

वो क्रांतिकारी जो हाथों में गीता लेकर फाँसी पर चढ़ा

एक 17 वर्ष का लड़का या लड़की। आज यानी 2023 में क्या कर रहा होगा? वो अपने भविष्य को लेकर चिंतित होगा, या हो सकता है कि वो अपने मंजिल को पाने की तैयारी में लगा हो.....लेकिन आज से 133 साल पहले.... पश्चिम बंगाल में जन्में एक लड़के ने अंग्रेज़ी हुकूमत के नाक में दम करके रख दिया था। आज कहानी उस 18 साल के लड़के की, जिससे अंग्रेज़ी हुकूमत थर थर कांपती थी। आज अनजान कुर्बानियां में कहानी भारत माता के लाडले खुदीराम बोस की, जिसने भगवतगीता को हाथ में लेकर हँसते-हँसते फांसी के फंदे को चूम लिया था। पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गावँ हबीबपुर में 3 दिसंबर 1889 को खुदीराम बोस का जन्म हुआ था। उनका नाम "खुदीराम" कैसे पड़ा, इसके पीछे एक रोचक क़िस्सा है। दरअसल, खुदीराम बोस की माँ लक्ष्मीप्रिया ने बेटे को जन्म देने के बाद उसे आकाल मृत्यु से बचाने के लिए किसी और को दे दिया था, बाद में बहन ने तीन मुट्ठी खुदी यानी कि चावल देकर उन्हें वापस लिया था। क्योंकि बच्चें को खुदी देकर वापस लिया गया था, इसलिए उनका नाम खुदीराम बोस पड़ गया। खुदीराम बोस में बचपन से ही राष्ट्र के प्रति प्रेम दिखता था। आज़ादी के लिए हो रहे आंदोलनों में वो उस उम्र में शामिल हो गए थे, जिस उम्र में आज के बच्चें रील्स बनाते हैं। बात साल 1905 की है, वो जब 8वीं कक्षा में थे तो पश्चिम बंगाल में "बंग भग विरोधी आंदोलन" चल रहा था, उस आंदोलन में खुदीराम बोस ने हिस्सा लेकर बंगाल विभाजन का विरोध किया था। माना जाता है, कि क्रांतिकारी सत्येन बोस के सानिध्य में ही खुदीराम बोस ने अपना क्रांतिकारी जीवन शुरू किया था। वो मिदनापुर के अलग-अलग इलाक़ो में जाकर दुकानदारों से अनुरोध किया करते थे कि वो अपनी दुकानों में विदेशी सामानों को नहीं रखें। लेकिन जब कुछ दुकानदारों ने इनकी बात नहीं मानी तो खुदीराम बोस और उनके साथियों ने उन दुकानों को आग के हवाले कर दिया। बचपन से ही वो अरविंदो घोष और बहन निवेदिता जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के भाषणों को सुना करते थे। इन्हीं लोगों के बातों ने खुदीराम बोस के मन में देश के प्रति प्रेम और भारत को गुलामी के बेड़ियों से आज़ादी दिलाने की इक्षा जगाई थी। खुदीराम बोस की पहली दफ़ा गिरफ्तारी मात्र 15 वर्ष की आयु में हुई थी। दरअसल, वो ब्रिटिश शासन के ख़िलाफ़ पर्चें बाँटा करते थे, जिसपर अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंकने का उद्घोष लिखा हुआ करता था। वो जब स्कूल में थे, तभी से वो अंग्रेज़ी हुकूमत के खिलाफ पर्चे और आंदोलनों में शामिल होने जैसे कार्यों में होते थे। लेकिन उनकी ज़िंदगी में नया और अहम मोड़ साल 1908 में आता है। जब वो अरबिंदो घोष और भाई बीरेंद्र घोष जैसे गरमदल गुट के क्रांतिकारियों के अगुवाई में बनाई गई अनुशीलन समिति से जुड़ते है। इस समिति का उद्देश्य अंग्रेज़ों को भारत से बाहर निकालने के लिए हिंसक तरीकों का सहारा लेना था। इस समिति का भाग बनने के बाद खुदीराम बोस ने बम बनाना सीखा, हथियारों को चलाना सीखा। इसके अलावा ब्रिटिश अधिकारियों को निशाना बनाने के लिए बमों को थानों के पास लगाने का काम खुदीराम बोस किया करते थे। इसी दौरान उनके जीवनकाल में एक अहम मोड़ और आता है।

दरअसल, उस वक़्त डगलस एच किंग्सफोर्ड नाम का एक क्रूर ब्रिटिश अधिकारी कोलकाता के मुख्य न्यायाधीश के पद पर स्थापित हुआ करता था। अंग्रेज़ी अफसर अपने कठोर व्यवहार और स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति नकारात्मक सोच रखने के कारण लगातार क्रांतिकारियों के निशाने पर था। इसी वजह से किंग्सफोर्ड को सुरक्षित रखने के लिए कलकत्ता से बिहार के मुजफ्फरपुर भेज दिया गया। अंग्रेज़ी हुकूमत ने सोचा था कि शायद क्रांतिकारियों का गुस्सा इससे शांत हो जाये। लेकिन उस अंग्रेज़ी अफसर का काल तो उसके पीछे ही मंडरा रहा था। किंग्सफोर्ड को मारने के लिए योजना बनाई गई कि उसे न्यायालय कक्ष में ही बम विस्फोट के जरिये मार दिया जाएगा। लेकिन इस योजना को टालना पड़ा क्योंकि इससे बड़ी संख्या में आम नागरिक घायल हो जाते। इसीलिए किंग्सफोर्ड के हत्या की दूसरी योजना बनाई गई और इसे अंजाम देने के लिए खुदीराम बोस और प्रफुल्ल कुमार चाकी का चयन किया गया। 30 अप्रैल 1980 का वक्त था, जब किंग्सफोर्ड के घोड़े क्लब से निकले ही थे कि दोनों क्रांतिकारियों ने उसपर बम फेंक दिया। बम का भयंकर विस्फोट हुआ और उस बग्घी पर सवार लोगों की मौत हो गई। उस बग्घी पर बैरिस्टर प्रिंगल कैनेडी की पत्नी और बेटी सवार थी। यह हमला जिस प्रयोजन से किया गया था, वो असफल रहा।किंग्सफोर्ड फिर से बच कर निकलने में कामयाब हो गया। हालांकि इस बम विस्फोट की घटना को अंजाम देने के बाद दोनों क्रांतिकारियों की खोज शुरू हो गई। कलकत्ता से विशेष पुलिसबल को बुलाया गया। काफी खोजबीन के बाद खुदीराम बोस को वैनी रेलवे स्टेशन से पकड़ा गया, जहाँ वो 25 किलोमीटर पैदल चल कर पहुँचे थे। वहीं प्रफुल्ल कुमार चाकी ने गिरफ्तारी से पहले ही आत्महत्या कर ली थी। खुदीराम बोस को गिरफ्तार करके हाथों में हथकड़ी डालकर जब मुजफ्फरपुर लाया गया, तब सड़को पर उस 18 वर्षीय वीर बालक को देखने के लिये लोगों का हुजूम खड़ा था। कई महीनों तक खुदीराम बोस पर मुकदमा चला, सुनवाई हुई और 13 जून 1908 को उन्हें फांसी की सज़ा सुनाई गई।

अमृत बाज़ार पत्रिका और द एम्पायर जैसे समाचार पत्रों ने लिखा था कि "इस क्रांतिकारी लड़के का मिज़ाज ऐसा था कि वह फाँसी के तख्ते पर चढ़ते समय भी मुस्कुरा रहा था।" जिस रास्ते से उनके शव को निकाला गया उस रास्ते पर भारी भीड़ उमड़ी पड़ी थी। स्वतंत्रता के लिए उनके बलिदान को दिल ही दिल में स्वीकार करते हुए, लोग चुपचाप उनके ऊपर फूल बरसाते रहे।

आगे जाकर उनकी शहीदी हज़ारों क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा बनी। हालांकि ये बात बहुत कम लोगों को पता है कि खुदीराम बोस के शहीद होने बाद उनपर बाल गंगाधर तिलक ने कई लेख लिखे थे। जिसके कारण बाल गंगाधर तिलक को 1908 से लेकर 1913 तक राष्ट्रद्रोह के आरोप में बर्मा की जेल में रखा गया था। खुदीराम बोस के मौत के बाद बंगाल में कई दिनों तक स्कूलों को बंद रखा गया था। वो युवाओं के बीच इतने प्रचलित हो गए थे, की उस वक़्त हर युवा के कपड़े पर खुदीराम बोस का नाम लिखा होता था। खुदीराम बोस ने एक बार कहा था कि "क्या गुलामी से बड़ी और भद्दी कोई दूसरी बीमारी हो सकती है?" और वो इसी गुलामी से भारत को आज़ाद करने के लिए फांसी के फंदे पर झूल गए। लेकिन कितना बड़ा दुर्भाग्य है, की आज खुदीराम बोस के बारे में सीमित लोग ही जानते हैं। ■

— शुभम राजा

"पेपर लीक" पर पाबंदी कब?

एक सामान्य परिवेश से संबंध रखने वाला युवा, जब अपने घर से सैकड़ों किलोमीटर दुर राजधानी दिल्ली के अतिव्यस्त इलाक़े से गुजरती एक सकड़ी गली के एक छोटे से कमरे में रह कर, सरकारी नौकरी के तैयारी में लगा रहता है। एक-दो वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद सरकारी नौकरी का फ़ॉर्म निकलने का इंतज़ार, फिर फ़ॉर्म भड़ने के बाद परीक्षा के तारीख़ों का इंतज़ार, और इतने इंतज़ार के बाद "पेपर लीक"। उसके बाद थोड़ा हंगामा होता है, फिर विपक्ष के द्वारा सीबीआई से जाँच करवाने कि माँग होती है, फिर कुछ दिनों बाद पुनः परीक्षा करवाने कि घोषणा कर दिया जाता है। कुल मिलाकर कोई भी सरकार हो, सरकारी नौकरी का पेपर लीक होना तय माना जाने लगा है। जब कोई पार्टी विपक्ष में रहती है तब उनके पास पेपर लीक ना हो, इसके कई उपाय होते हैं, लेकिन जैसे ही वो सत्ता में बैठते हैं, सब उपाय भूल जाते हैं। राज्यों की सीमा बदलती हैं, सत्ता पर बैठे व्यक्ति के झंडे का रंग बदल जाता हैं, कुर्सी की विचारधारा बदल जाता है, लेकिन पेपर लीक होना बंद नहीं होता। शायद सत्ता में बैठे व्यक्तियों ने इसे अपना लोकतांत्रिक अधिकार समझ लिया हैं। एक समय में शिक्षा का केंद्र रहा बिहार, जहाँ छात्रों को पुलिस के द्वारा बस इस लिए निर्दयतापूर्ण तरीक़े से मारा जाता है क्योंकि वो बीएसएससी सीजीएल पेपर लीक के ख़िलाफ़ प्रदर्शन कर रहे थें। उन बच्चों की बस इतनी माँग थी, कि सरकार दोबारा परीक्षा आयोजित करवा दे।लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पुलिस ने उनपर ना सिर्फ निष्ठुरता से लाठी बरसाई बल्कि कई छात्रों को जेल में डाल दिया। और बिहार के आम लोग सबसे अचंभित तब हुए, जब पत्रकारों ने नीतीश कुमार से छात्रों पर लाठीचार्ज करने में सवाल पूछा तो उनका जवाब था- मुझे इसकी जानकारी नहीं है, मैं पता करता हूँ कि क्या मामला है. हालाँकि बिहार में यह कोई नई बात नहीं है। 10वीं से लेकर उच्च स्तर तक कि सभी

"पेपर लीक"

राजस्थान
- सितंबर 2018- रीट
- साल 2022- पटवारी
- दिसंबर 2022- जेईएन परीक्षा
- सितंबर 2019- लाइब्रेरियन परीक्षा
- साल 2022- राजस्थान 2nd ग्रेड शिक्षक परीक्षा

बिहार
- बिहार बीपीएससी परीक्षा
- बीएसएससी सीजीएल एसएससी परीक्षा पेपर लीक- 2017
- बिहार पुलिस पेपर लीक- 2017
- बिहार दरोगा पेपर लीक- 2017, 19, 22

अन्य
- उत्तर प्रदेश राजस्व लेखपाल पेपर लीक
- यूपी टेट पेपर लीक- 2022
- हिमाचल प्रदेश एस एस सी पेपर लीक

> *हमारे नौजवान बहनों-भाइयों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जायेगा। आप सबको हुई असुविधा के लिए जिम्मेदार लोगों को सजा जरूर मिलेगी।।*
>
> *- योगी आदित्यनाथ*

परीक्षाओं में पेपर लीक के मामले सामने आई है। सरकारें जरुर बदलते हैं लेकिन पेपर लीक होने का सिलसिला ख़त्म नहीं होता है। 2017 से लेकर अब तक आधे दर्जन से अधिक सरकारी परीक्षाओं का पेपर लीक हो गया है। और किसी के जाँच में अब तक कोई भी प्रभावी कारवाई नहीं हुई है। साल 2017 में एसएससी की परीक्षा के शुरु होने के कुछ देर बाद ही पेपर लीक होने की ख़बर सामने आ गई और इस मामले में एक आईएएस अधिकारी को गिरफ्तार किया गया था। इसके अलावा 2017 में बिहार पुलिस के पेपर लीक होने का मामला सामने आया था। साल 2022 में यानि की गत वर्ष तीन बड़े सरकारी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने का मामला सामने आया था। माना जाता है कि बिहार में होने वाले 90 प्रतिशत सरकारी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक हो जाते हैं। राजस्थान की स्थिति भी कुछ कम बुरी नहीं हैं। पिछले कुछ वर्षों में देश में सबसे अधिक पेपर लीक के मामले इसी राज्य से सामने आए। साल 2022 में पटवारी के 5,378 पदों के लिए हो रहे परीक्षा का पेपर आउट हो गया था। इस परीक्षा में कुल 15 लाख से अधिक अभ्यार्थी शामिल हुए थे। घटना के प्रकाश में आते ही छात्रों ने कई दिनों तक आंदोलन किया, फिर जाकर पुलिस ने 12 लोगों को गिरफ्तार किया था। इसके अलावा 2021 में रीट, 2020 में जेईएन सहित कई अन्य परीक्षाओं के पेपर लीक का मामला प्रकाश में आया। साल 2022 में राजस्थान में आयोजित शिक्षक परीक्षा का प्रश्न पत्र सोशल मीडिया पर डाल दिया गया था।

"आगामी सभी भर्ती परीक्षाओं में लागू होगा नकल विरोधी कानून, सजा के हैं कठोर प्रावधान"

\- पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

इस परीक्षा में दो लाख से अधिक अभ्यार्थी शामिल हुए थे। इस मामले में पुलिस ने 44 लोगों को गिरफ्तार किया था, जिसमें 37 छात्र और 7 विशेषज्ञों को गिरफ्तार किया गया था। इसके अलावा फार्मासिस्ट पद के लिए होने वाला परीक्षा की घोषणा अब तक पाँच बार हो चुकी है लेकिन अभी तक सरकार इम्तहान नहीं ले पाई है। उत्तर प्रदेश में भी कुछ ऐसी ही स्थिति बनी हुई है। 2022 में आयोजित यूपी टीईटी की परीक्षा में बैठे 21 लाख अभ्यार्थियों के पैर तले ज़मीन तब निकल गया, जब उन्हें पता चला कि प्रश्न पत्र वाट्सएप्प पर लीक हो गया। 46 लोगों को इस मामले में गिरफ्तार किया गया था। इतना ही नहीं, 30 मार्च 2022 को यूपी बोर्ड के द्वारा करवाई जा रही इंटर की परीक्षा को रद्द कर दिया गया था, कारण- पेपर लीक। इस मामले में यूपी पुलिस ने 46 लोगों को हिरासत में लिया था। ये तो कुछ बड़े राज्यों में हुए पेपर लीक के मामले हैं। गंभीर स्थिति यह है कि कई ऐसे छोटे राज्य हैं, जहाँ पेपर लीक के मामले राष्ट्रीय बहस का मुद्दा नहीं बनता है। जैसे, अरुणाचल प्रदेश में साल 2022 के सितंबर में सिविल इंजीनियर का पेपर लीक हुआ था। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश में एसएससी का पेपर लीक हुआ। इस परीक्षा में कुल 1.5 लाख अभ्यार्थी शामिल हुए थे। वहीं एक और मामला हिमाचल प्रदेश से कॉन्स्टेबल बहाली में पेपर लीक का सामने आया था। इस प्रकरण में 253 लोगों की गिरफ्तारी हुई थी। चिंताजनक विषय यह है कि इस देश में सरकार 12वी की परीक्षा करवाने में असमर्थ नज़र आती है। हरियाणा में साल 2022 में 12वीं कक्षा के फाइनल परीक्षा का पेपर लीक हो गया था। दक्षिण भारतीय राज्य, आंध्र प्रदेश में अक्टूबर 2022 के वक़्त पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा का पेपर लीक हो गया था। दरअसल, दक्षिण भारत के राज्यों को राष्ट्रीय विमर्श में जगह नहीं दिया जाता है, इसीलिए ये खबरें हमारे सामने

नहीं आ पाती है। भारत में सरकारी परीक्षाओं को पंच वर्षीय योजना की तरह देखा जाने लगा है। इसकी वजह यह है कि जब चुनाव आता है तब नौकरियों की घोषणा होता है। फिर उस नौकरियों की बहाली होते होते अगला चुनाव आ जाता है। मूल रूप से एक तरफ सीबीएसई बोर्ड, जो सबसे बड़ी परीक्षा एक निष्पक्ष तरीके से करवा सकता है, जब चुनाव आयोग पूरे निष्पक्ष और निर्विवाद रूप से चुनाव करवा सकता है, तो इस देश के सभी संसाधनों से सम्पन्न सरकारें, सरकारी नौकरी के लिए होने वाला परीक्षाओं को क्यों नहीं को पूरी पारदर्शिता से करवाती है? भले ही कुछ राज्यों के राजनीतिक दलों के लिए "पेपर लीक" मात्र एक मुद्दा हो, लेकिन करोड़ो लड़के और लड़कियों के लिए यह जीवनयापन का सवाल है। एक छोटे से घर में रहकर, वर्षों तक पढ़ाई करने वाले छात्र या छात्रा, जो आर्थिक रूप से भी सम्पन्न नहीं है, वो कितने वर्षों तक इन परीक्षाओं की तैयारी में लगा सकते हैं? कई-कई परीक्षाओं की पूरी प्रक्रिया पूरे होते

प्रदर्शन के दौरान छात्र और पुलिस आमने-सामने

होते 7-8 वर्षों का समय लग जाता है। सरकारी तंत्र के इसी कुव्यवस्था के कारण कई बच्चें तैयारी छोड़ कर किसी कंपनी में काम करने को मजबूर हो जाते हैं, लड़कियों की शादी कर दी जाती है। चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो, स्थिति पिछले कई दशकों से ऐसी ही बनी हुई है। पेपर लीक के मामले जब प्रकाश में आते हैं, तो विपक्ष में बैठी दल कई प्रकार के सुझाव देते हैं, उपाय सुझाते हैं, की कैसे इन पेपर लीक को रोका जाए। लेकिन जब वही राजनीतिक दल विपक्ष से सत्ता में आती है, तो उनके द्वारा सभी उपायों और सुझावों को तिलांजलि दे दिया है। गहनता से हमें सोचने की जरूरत है, की क्या सरकार का यह सरोकार नहीं है कि वो इस देश के युवा/युवती को समय पर नौकरी दे पाए? क्या इस देश के सरकारी तंत्रों में बैठे अधिकारियों की यह जवाबदेही नहीं होनी चाहिए कि क्यों इतने संसाधनों से समृद्ध होते हुए भी सरकारी परीक्षा पारदर्शिता से नहीं हो पाती है? ■

— शुभम राजा

"BPSC पर बोले - मैंने पुलिस को जांच में तेजी लाने के लिए कहा है। जिस व्यक्ति ने भी पेपर लीक किया उसके खिलाफ कार्रवाई होगी"

- नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार

"जासूसी गुब्बारा" या "एलियन यूएफओ"

अमेरिका और अमेरिकी प्रशासन के लिए इन दिनों सफेद गुब्बारा काफ़ी सरदर्द बना हुआ है। पिछले दो महीनों में अमेरिका के आसमान में कई दफ़ा उजले गुब्बारे देखने को मिले हैं। पहले तो इसे चीन का "जासूसी गुब्बारा" करार देते हुए नष्ट कर दिया गया लेकिन अब दबे जुबान में यह चर्चा हो रही है कि क्या ये कोई एलियन यूएफओ है?इस प्रकरण का शुरुआत अमेरिका के मोंटाना शहर से हुआ। जहाँ अमेरिकी न्यूक्लियर मिसाइल क्षेत्र है। काफ़ी चर्चा विचार के बाद पता चला कि ये गुब्बारा चीन के द्वारा भेजा गया है, जो पिछले एक हफ़्ते से कई शहरों में घूम रहा था। लेकिन बाद में इसे नष्ट कर दिया गया। वहीं, इसके अलावा दो अन्य दफ़ा अमरीकी एयर स्पेस और एक बार कनाडा के एयर स्पेस में गुब्बारा देखा गया। हालांकि सभी को अमरीकी एयर फोर्स ने मार गिराया। हालांकि यह अभी तक साफ़-साफ़ पता नहीं चल पाया है कि आखिर ये गुब्बारा कहाँ से आ रहा है? यह सवाल पूछे जाने पर कि क्या वह अमेरिकी युद्धक विमानों द्वारा मार गिराए गए तीन हवाई वस्तुओं की एलियन होने की बात से इनकार करते हैं। इस पर जनरल ग्लेन वैनहर्क ने कहा, "मैं इंटेलिजेंस और काउंटर इंटेलीजेंस अधिकारियों को इसका पता लगाने दूंगा। मैंने किसी भी बात से इनकार नहीं किया है।" यूएस नॉर्थ अमेरिकन एयरोस्पेस डिफेंस कमांड (NORAD) और नॉर्दर्न कमांड के प्रमुख वैनहर्क ने कहा, 'हम इसे पहचानने की कोशिश करने के साथ ही हर संभावित खतरे और अज्ञात खतरे का आकलन कर रहे हैं।'

मार्च राशिफल

मेष (Aries) : इस माह में आपके सेहत में सुधार रहेगा किन्तु गृह कलेश से मानसिक अशांति उत्पन्न हो सकती है। भाग दौड़ बनी रहेगी। मनोबल भी ठीक ठाक रहेगा। व्यवसाय में प्रगति के साथ धन लाभ भी ठीक रहेगा। धन खर्चे पर ध्यान देना होगा क्योंकि धन खर्चा इस माह ज्यादा हो सकती है।

नोट: दिनांक 3,4,5,13,14,21,23,31 के दिन आपका मन अशांत रहेगा। खुद पर काबू रखने की कोशिश करें।

उपाये: मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 108 बार जाप करें।

वृष (Taurus): इस माह आपके पराक्रम में वृद्धि साहस में, मान सम्मान में वृद्धि होगी। कृषि में कार्यत व्यक्ति के जमीन सम्बन्धित कार्य पूरे होंगे। संतान से सुख प्राप्त होगा। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ कार्यों में धन खर्च होगा। नये लोगों से मुलाकात होगी।

नोट: दिनांक 6,7,15,24,25 का दिन मध्यम रहेगा।

उपाये: मंत्र ॐ शुक्राय नमः का 108 बार जाप करें।

मिथुन(Gemini) : इस माह व्यापारिक वर्ग के लिए लाभ की स्थिति बनेगी। कुछ गुप्त या पुराने शत्रु परेशान कर सकते है जिससे अशांति हो सकती है। इसके अलावा आप शरीर में थकान भी महसूस करेंगे। सामाजिक कार्य में बढ़ चढ़ के हिस्सा ले सकते है।

नोट: दिनांक 8,10,17,18,26 का दिन मध्यम फल कारी रहेंगे।

उपाये: मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 108 बार जाप करें।

कर्क(Cancer): इस माह व्यापारिक वर्ग के लोग जो जॉब कर रहे हैं उन सभी के लिए लाभ यथावत् रहने वाला है। कुछ कार्य जो आप के अधूरे थे वह इस समय में संतान की सहायता से पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखनी होगी। यात्रा का योग बनेगा।

नोट: दिनांक 12,19,21,29,30 का दिन मध्यम रहेगा।

उपाये: मंत्र ॐ सोम सोमाय नमः का 108 बार जाप करें।

सिंह (Leo): इस माह जितनी इनकम होगी उससे अधिक व्यय होने की संभावना बनी रहेगी। ऋण लेने की आवश्यकता पड़ सकती है। पुराने मित्र या रिश्तेदारों से मिलने का योग बनेगा। मन खुश रहेगा। मौसम बदलाव की बीमारी से सावधान रहें।वाद-विवाद से बचें।

नोट: 5,14,22,23,31 की तारीख कष्टप्रद रह सकती है।

उपाये: सूर्य को जल अर्पण करें।

कन्या(Virgo):इस माह व्यर्थ की दौड़ धूप से बचें वरना शारीरिक कष्ट हो सकता है। भाग्य का साथ ठीक-ठाक रहेगा। मन अशांत रह सकता है। शत्रुओं को लेकर मन चिंतित हो सकता है। परिवार में मेलजोल बना कर रहें। नए लोगों से संपर्क बनेगा।

नोट: दिनांक 6,7,16,23,25 का दिन मध्यम रहेगा।

उपाये: ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः 108 बार जाप करें। गणेश जी की पूजा करें।

तुला(Libra): इस माह राजकाज में सफलता मिलेगी। नई योजनाएं कामकाज को लेकर बना सकते हैं।धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी व धन खर्च भी हो सकता है। जमीन जायदाद संबंधित मामलों में सफलता हासिल होगी। लाभ प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि चतुराई से शत्रु भी परास्त होंगे।

नोट: दिनांक 8,10,17,26,27 का दिन मध्यम रहेगा।

उपाय:माता मंदिर में रोज सेवा करना प्रारंभ करें।

वृश्चिक (Scorpio): इस माह में आपको स्त्री, संतान सुख सहयोग मध्यम प्राप्त होगा। परिवार में परिवारजनों से अनबन होने से क्लेश का वातावरण बन सकता है, लेकिन मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा जिससे मनोबल बना रहेगा। आय-व्यय का संतुलन बना रहेगा।

नोट: दिनांक 11,19,21,28,31 का दिन थोड़ा मन अशांत रह सकता है।

उपाय: हनुमान जी की सेवा करें, हनुमान चालीसा का पाठ करें।

धनु(Sagittarius) इस माह में कुछ कार्य जो नए शुरू करने का प्रयास पिछले कुछ समय से कर रहे हैं वह अब प्रारंभ हो सकते हैं। कुछ विद्वान लोगों से संपर्क होगा जिससे मन प्रसन्न होगा। लाभ के साथ खर्च भी बढ़ सकता है। शारीरिक कष्ट हो सकता है। लंबी यात्रा का त्याग करना चाहिए जो अनावश्यक हो।

नोट: 4,5,14,21,23,31 तारीख को सावधानी से रहे।

उपाय: पीपल वृक्ष की सेवा करें, घी का दीपक जला कर पीपल के पास रखें।

मकर (Capricon): इस माह आपके भाग्य का साथ मिलेगा। होश व जोश पर संयम रखें वरना आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार जनों का सहयोग मिलेगा। आत्मबल में वृद्धि होगी। अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। भ्रमण का मौका मिलेगा।

नोट: दिनांक 7,15,16,23,24 के दिन अशुभ फलों में वृद्धि हो सकती है।

उपाय: शनि चालीसा का पाठ करें।

कुंभ (Aquarius): इस माह शरीर का सुख मध्यम रहेगा। भाई बहनों से सहयोग मिलेगा जिससे मनोबल बढ़ेगा। बिजनेस में लाभ व खर्च की समानता बनी रहेगी। दुष्ट जनों से बचकर रहें वरना मानहानि हो सकती है।

नोट: दिनांक 8,10,17,26,27 के दिन सतर्कता बरतें।

उपाय: हनुमान चालीसा का पाठ करें, हनुमान मंदिर जाना प्रारंभ करें।

मीन(Pieces): इस माह धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। साधु संतों से मिलकर शांति महसूस होगी। कारोबार में रोजगार में सफलता प्राप्त होगी। मन खुश रहेगा। नेत्र पीड़ा से शारीरिक परेशानी हो सकती है।

नोट: दिनांक 11,12,21,28,30 को मन की अशांति बढ़ सकती है।

उपाय: केले के वृक्ष की सेवा करना प्रारंभ करें और ॐ बृं बृहस्पतये नमः मंत्र का 108 बार जाप करें। ■

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

आचार्य योगेन्द्र शास्त्री

+91 787-719-9493

astroyogendershashtri@gmail.com

www.shashtri.com

कैसा सिला दिया देशभक्ति का...

भले ही आम जनता महान क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को शहीद मानती हो, लेकिन सरकार ने अब तक उन्हें अपने सरकारी दस्तावेजों में क्रांतिकारी दर्जा नहीं दिया है। *27 मार्च 2023 को इन क्रांतिकारियों की शहादत के 92 साल पूरे हो जाएंगे।* लेकिन भगत सिंह समेत सुखदेव और राजगुरु के वंशज आज भी इन क्रांतिकारी वीरों के न्याय के लिए संघर्षरत हैं। आजादी से अब तक जितनी भी सरकारें आईं, वह इन क्रांतिकारियों को शहीद घोषित करने से बचती रहीं। उनका मानना है कि हमारे शहीदों की शहादत किसी सरकारी रिकार्ड में हो या ना हो इससे उनकी वीरता साबित नही होती। क्योंकि उनका कद किसी उपाधी या दर्जे से बहुत ऊपर है। वहीं भगत सिंह के प्रपौत्र यादवेंद्र सिंह संधू ने कहा है कि वे शहीदों पर सरकारों के इस रवैये को देख हैरान हैं। सरकार से संधू सिर्फ इतना जानना चाहते है कि आख़िर सरकार हमारे वीर शहीदों को वह दर्जा क्यों नहीं दे रही जिसके वह हकदार हैं।

> *"वे मुझे मार सकते हैं, लेकिन वे मेरे विचारों को नहीं मार सकते।"*
>
> *- भगत सिंह*

जब संधू से पूछा गया कि भगत सिंह को तो जनता शहीद मानती है फिर सरकारी रिकॉर्ड की क्या जरूरत? तो इस सवाल के जवाब में संधू कहते हैं "भगत सिंह को शहीद घोषित कर दिया जाता तो कोई भी किताबों में उन्हें क्रांतिकारी आतंकी लिखने की हिम्मत नहीं करता'। पाकिस्तान में भी भगत सिंह को न्याय दिलाने के लिए वहां के लोगों ने कोर्ट में ही केस डाला हुआ है। संधू के मुताबिक वह इस मामले को लेकर कई सरकारी कर्मचारियों से मिल चुके है। इसके साथ ही उन्होंने पत्र भी लिखे है लेकिन उन्हें इसके लिए कोई खास

DEFENDER डिफेन्डर पहल भारत निर्माण की

जवाब नही मिला। इतिहासकार अली अख्तर के मुताबिक

"देश का बच्चा-बच्चा जानता है कि भगत सिंह ने देश के लिए अपनी जान दे दी, फिर सरकार को शहीद घोषित करने में क्या दिक्कत हो सकती है। दरअसल सरकार को भगत सिंह से कोई सियासी फायदा नहीं होता इसलिए वह इस बारे में जज्बा भी नहीं दिखाती। सरकार जब चाहे तब भगत सिंह को दस्तावेजों में शहीद घोषित कर सकती है, इसमें कोई तकनीकी दिक्कत नहीं है। भगत सिंह अंग्रेजों के लिए भले ही क्रांतिकारी आतंकी थे, लेकिन हमारे लिए वह शहीद हैं।"

- भगत सिंह का परिवार

साल के नौवें महीने का यह 27वां दिन इतिहास में भारत माता के सबसे लाडले पुत्र और अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए 23 बरस की छोटी सी उम्र में फांसी के फंदे पर झूल गए अमर शहीद भगत सिंह के जन्मदिन के तौर पर दर्ज है।

गुलामी का वक्त था और चारों तरफ आज़ादी के नारे लग रहे थे। जब बच्चे से लेकर बूढ़ों तक में अपनी भारत माँ को आज़ाद कराने का जज़्बा उमड़ गया था। साल 1931 का वक्त था जब 24 मार्च को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दी जानी थी। भगत सिंह इस फैसले से खुश नहीं थे। उन्होंने 20 मार्च 1931 को पंजाब के गवर्नर को एक खत लिखा उन्होंने उस खत में लिखा कि उनके साथ युद्धबंदी जैसा सुलूक किया जाए और फांसी की जगह उन्हें गोली से उड़ा दिया जाए। 22 मार्च 1931 को अपने क्रांतिकारी साथियों को लिखे आखिरी खत में भगत ने कहा- "जीने की इच्छा मुझमें भी है, ये मैं छिपाना नहीं चाहता। मेरे दिल में फांसी से बचने का लालच कभी नहीं आया। मुझे बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है।"

जल्दी ही वह दिन भी आया जब भगत सिंह और उन्हें साथियों को फांसी होनी थी। लेकिन 23 मार्च 1931 को तय वक्त से 12 घंटे पहले ही, शाम 7 बजकर 33 मिनट पर भगत, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी गई।

गंगापुर से करीब 20 किलोमीटर दूर फैसलाबाद-जड़ानवाला रोड पर भगत सिंह का गांव बंगा है जो अब भगत सिंह के नाम पर यानि भगतपुर के नाम से जाना जाता है। भगत सिंह का घर आम घरों के जैसे ही है। इस गांव के लोगों ने भगत सिंह के घर और उनसे जुड़ी चीजों को काफी संभाल कर रखा हुआ है। भगत का घर अब जमात अली विर्क की संपत्ति है। बंटवारे के बाद उनके दादा सुल्तान मुल्क को यह घर सरकार की तरफ से मिला था। भगत की हवेली में दो कमरे और एक आंगन है। भगत के पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह और सोरन सिंह भी स्वतंत्रता सेनानी थे। इस गांव में आज भी वो स्कूल मौजूद है, जहां भगत ने अपनी पढ़ाई की थी। अब इस स्कूल का नाम भगत सिंह के नाम पर ही रख दिया गया है।

> *"इस कदर वाकिफ है मेरी*
> *कलम मेरे जज़्बातों से,*
> *अगर मैं इश्क लिखना भी चाँहू,*
> *इन्क़लाब लिख जाता हूं।"*
>
> *- भगत सिंह*

जमात अली बताते हैं- बंटवारे के बाद भगत सिंह के भाई कुलबीर सिंह 1985 में पहली बार यहां आए थे। उन्होंने हमें बताया था कि यह घर भगत सिंह के परिवार का है। हमने तभी से इसे संभाल कर रखा है। गांव के लोगों का दावा है कि भगत सिंह के हाथ का लगाया हुआ आम का पेड़ आज भी इस घर के आंगन में मौजूद है। गांव के लोग भगत को अपना बेटा मानते हैं और कहते हैं कि आजादी का इतिहास चाहे भारत का हो या पाकिस्तान का, भगत के बिना पूरा नहीं हो सकता था। ■

प्रियंका सिंह

सबका साथ, सबका विकास वाला बजट

भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक देश में बजट का महत्व अधिक हो जाता है। भले ही अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को हर वर्ष 1 फरवरी को वित्त मंत्री के द्वारा पेश किए गए बजट से कोई अधिक लेना-देना नहीं होता है। लेकिन हर वर्ष का बजट ही आम लोगों के जीवन में अगले साल भर क्या होगा, वो तय करता है। जब से मोदी सरकार ने जीएसटी लाया है, तब से बजट में आम लोगों की दिलचस्पी और कम हो गई है। हालांकि, बजट के कुछ हिस्सों पर मध्यम वर्गीय परिवारों की नज़र जरूर रहती है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए लाया गया आर्थिक बजट मोदी सरकार 2.0 का आखिरी पूर्ण बजट है। अगले साल यानी कि साल 2024 में लोकसभा चुनाव होना है, उससे ठीक पहले यानी कि 1 फरवरी 2024 को आंशिक बजट लेकर आएगी। आर्थिक बजट अमीर से लेकर गरीब व्यक्ति के भविष्य संवारने में अहम भूमिका निभाता है।

> *"शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, रोजगार और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे तमाम जरूरी क्षेत्रों में सरकार अगले एक वर्ष में कितना खर्च करेगी, यह तय बजट में ही होता है।"*

इतना ही नहीं, कई बजट में ऐसे प्रावधान लाया जाता है, जिसका असर आने वाले एक-दो दशकों के बाद सामने आता है। बजट में कल्याणकारी योजनाएं चल रही है या पहले से चली आ रही है या आने वाले समय में कौन सा योजना लाया जा सकता है, इन सब पहलुओं के बारे में जिक्र होता है। आसान भाषा में समझें तो बजट का मकसद यह होता है सरकार राजस्व के तुलना में खर्चे को किस हद तक बढ़ा सकता है। बजट बनाने की प्रक्रिया काफ़ी लंबा होता है। बजट आने से लगभग 6-7 महीने पहले सभी मंत्रालयों को यह निर्देश दिया जाता है कि आने वाले एक वर्ष में उनके

DEFENDER डिफेन्डर पहल भारत निर्माण की

सप्तर्षि - 7 प्राथमिकताएं

विभाग में कितना पैसा कौन से योजना पर खर्च होने वाला है, इसकी वित्तीय जानकारी वो मुहैया करवाएं। सभी मंत्रालयों से जानकारी जुटाने के बाद केंद्रीय वित्त मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा विस्तार से एक रिपोर्ट बनाई जाती है। इस दौरान योजनाओं से लेकर टैक्स स्लैब जैसे हर छोटी बड़ी पहलुओं पर नज़र रखा जाता है। रिपोर्ट तैयार करने में वित्त मंत्री, प्रधानमंत्री और योजना आयोग का अहम योगदान होता है। संविधान के अनुछेद 112 के अनुसार ही वित्तीय ब्यौरा या बजट को परिभाषित किया जाता है।नरेंद्र मोदी सरकार का यह 10वां बजट था। अगर हम इस सरकार के पिछले सभी बजटों पर गहन अध्ययन करें तो सरकार ने बजट के माध्यम से लोगों को मिलने वाली तत्काल लाभ से दूर रखा है।

> “देश के नागरिकों पर भरोसा हमारी नीतियों में भी साफ दिखता है और बजट में भी साफ दिख रहा है। इसी भरोसे की बुनियाद पर सरकार ‘Ease of Doing Business 2.0’ अभियान शुरू करने जा रही है।”
>
> - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

मोदी सरकार के दसों बजट में भविष्य का भारत कैसे आर्थिक तौर पर सशक्त बनें, इसपे जोड़ दिया है। इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण हो, निजी क्षेत्रों को बढ़ावा देना हो या फिर सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हो, इस सरकार के बजट में इन सब चीज़ों का उल्लेख मिलता है। साल 2023-24 का वित्तीय बजट भी कुछ ऐसा ही है। हालांकि, अगले साल लोकसभा चुनाव होने वाला है और उससे पहले 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने वाला है, तो कुछ घोषणाएं जरूर मध्यम वर्ग, महिला और युवाओं को साधने के लिये किया गया है। साथ ही इस बजट को साल 2047 के समय में भारत कैसा होगा, इसको ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। वित्त मंत्री के बजटीय भाषण में इसे अमृत काल का बजट कहा गया। अमृत काल के इस बजट में सात प्राथमिकता तय की गई है। सात प्राथमिकताएं:-1: समावेशी विकास- यह साल 2023-24 के लिए प्रथम प्राथमिकता है। समावेशी विकास का अर्थ मोदी सरकार के "सबका साथ सबका विकास" के नारें से जोड़ सकते हैं। इस के तहत सरकार अगले एक साल में कृषि क्षेत्र, युवाओं और स्वास्थ्य पर बल देगी। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कृषि ऋण को 20 लाख करोड़ रुपये कर दिया है। कृषि ऋण के साथ ही कृषि प्रौद्योगिकी उद्योग और कृषि क्षेत्र में स्टार्ट अप को सरकार आगे बढ़ाने के लिए मदद करेगी। इसके अलावा आत्मनिर्भर स्वच्छ पादप कार्यक्रम से बागवानी करने वाले लोगों को मदद किया जाएगा। शिक्षा के क्षेत्र में 157 नए नर्सिंग कॉलेज खोलने का घोषणा किया गया। वित्त मंत्री के द्वारा किताबों और उसके ज्ञान को हर घर तक पहुंचाने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय के स्थापना और पंचायत व वार्ड स्तर पर

पुस्तकालयों के निर्माण करने का घोषणा हुआ। 2: अंतिम छोड़ तक पहुंचना- भारत जैसे बड़े जनसंख्या वाले देश में सरकार की सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि किसी योजना को कैसे अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जाए? पिछले 8 सालों में नरेंद्र मोदी सरकार इसमें कई हद तक सफल जरूर रही है। इस वित्तीय वर्ष के बजट में प्रधानमंत्री आवास योजना के राशि में 66% का वृद्धि किया गया है, यानी सरकार बेघरों को तेजी से घर देने के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही आदिवासी क्षेत्रों में स्थापित एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों में 740 शिक्षकों के भर्ती का भी घोषणा किया गया। इस प्राथमिकता में एक अहम घोषणा यह हुई कि लगभग 1 लाख प्राचीन शिलालेखों के डिजिटलीकरण करने के लिए भारत श्री का स्थापना किया जाएगा। वहीं, आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम की सफलता के आधार पर आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम हाल ही में 500 ब्लॉकों को कवर करते हुए शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि, जल संसाधन, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और बुनियादी ढाँचे जैसे कई क्षेत्रों के प्रदर्शन में सुधार करना है।3: अवसंरचना और निवेश- मोदी सरकार लगातार इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश कर रही है। चाहे सड़कों का निर्माण हो या फिर बाहरी निवेश, इस सरकार को इसमें काफ़ी हद तक सफलता मिली है। इस वित्तीय वर्ष में सरकार ने पूंजी निवेश को 33% बढ़ाकर जहाँ 10 लाख करोड़ रुपए कर दिया है तो वहीं रेलवे को अबतक का सबसे बड़ा बजट 2.40 लाख करोड़ रुपए का आवंटित किया गया है। इसके साथ ही विमानन क्षेत्र में भी 50 अतिरिक्त हवाई अड्डे बनाने का घोषणा किया गया है। इसके अलावा इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकारों को 50 वर्ष

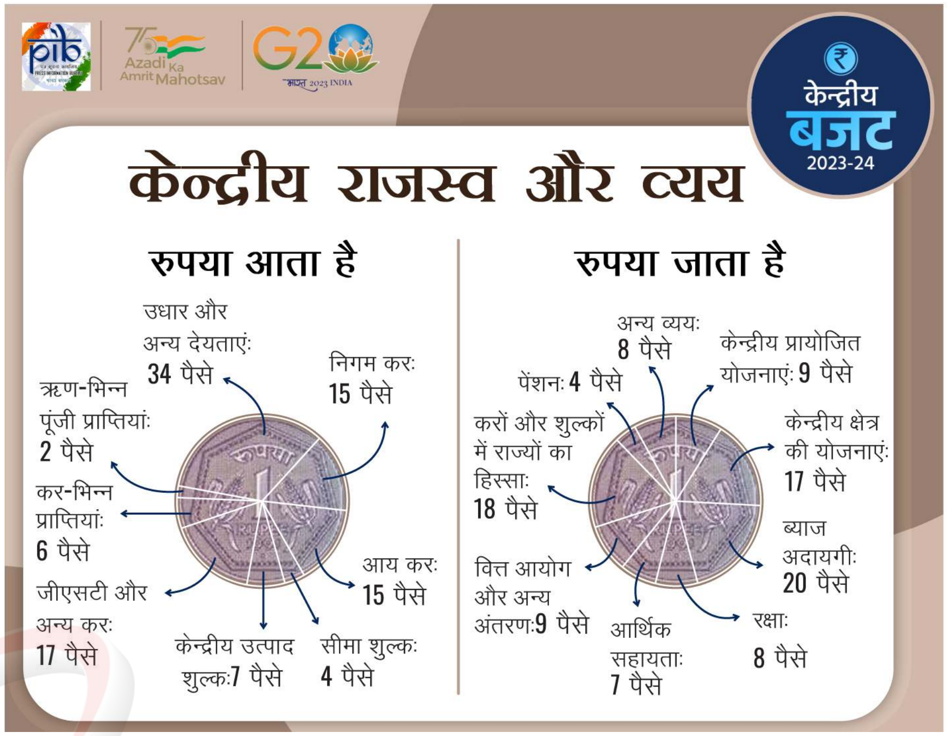

के ब्याज मुक्त ऋण को एक और वर्ष जारी रखने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा अन्य परिवहन परियोजनाएं पर 75,000 करोड़ रुपये खर्च करने का निर्णय लिया गया है। 4: क्षमता को उजागर करना- इस प्राथमिकता में देश के लोगों के अंदर छुपे

"नई कर व्यवस्था प्रभावी है क्योंकि इसमें मानक कटौती की अनुमति है, और अलग-अलग स्लैब के लिए कर की कम दरें तय की गई हैं, जिससे लोगों के हाथ में अधिक पैसा हो सके।"

- निर्मला सीतारमन

क्षमता को निखारने का प्रयास करेगी। कंपनी अधिनियम 2013 में किये गए संशोधनों के तहत व्यापार सुगमता को बढ़ाने के लिये 39,000 से अधिक अनुपालन कम किये गए हैं और 3,400 से अधिक कानूनी प्रावधानों को गैर-अपराधीकृत किया गया है। विश्वास पर आधारित शासन को आगे बढ़ाने के लिये सरकार ने 42 केंद्रीय अधिनियमों में संशोधन के लिये जन विश्वास विधेयक पेश किया। साथ ही "मेक AI इन इंडिया एंड मेक AI वर्क फॉर इंडिया" के विज़न को साकार करने के लिये शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिये तीन बड़े केंद्र स्थापित किये जाएंगे। साथ ही वित्त मंत्री ने घोषणा किया कि ई-न्यायालय का तीसरा चरण शुरू किया जाएगा।5: हरित विकास- यह सरकार की पांचवी प्राथमिकता हैं। इसके तहत सरकार अगले तीन वर्षों में एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिये प्रोत्साहित कर उनकी सहायता करेगी। साथ ही राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के लिये

DEFENDER मासिक पत्रिका

19,700 करोड़ रुपए आवंटित किये गए हैं ताकि अर्थव्यवस्था को कम कार्बन तीव्रता में परिवर्तित करने, जीवाश्म ईंधन के आयात पर निर्भरता को कम करने तथा देश को इस उभरते हुए क्षेत्र में प्रौद्योगिकी और बाज़ार का नेतृत्त्व करने के लिये तैयार किया जा सके। इसका लक्ष्य वर्ष 2030 तक 5 MMT के वार्षिक उत्पादन तक पहुँचने का है। गोबरधन योजना के तहत 10,000 हज़ार करोड़ रुपए के कुल निवेश के साथ 500 नए 'अपशिष्ट से आमदनी' संयंत्र स्थापित किये जाएंगे।6: युवा शक्ति- जैसा कि हमने शुरू में कहा था कि इस बजट में युवाओं पर अधिक बल दिया गया है। प्रधानमंत्री कैशल विकास योजना के चौथे चरण का शुरुवात किया जाएगा। इसके तहत ऑन जॉब प्रशिक्षण, आधुनिक पाठ्यक्रम जैसे कोडिंग, ए आई, रोबोटिक्स और ड्रोन आदि की पढ़ाई करवाया जाएगा। इसके अलावा अगले तीन सालों में 47 लाख युवाओं को स्टाइपेंड दिया जाएगा। सरकार के द्वारा एक जिला-एक उत्पाद को बढ़ावा दिया जाएगा। आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने हेतु नई लघु बचत योजना, महिला सम्मान बचत प्रमाणपत्र, को मार्च 2025 तक दो साल की अवधि के लिये उपलब्ध कराया जाएगा। यह आंशिक निकासी विकल्प के साथ महिलाओं या लड़कियों (7.5% की निश्चित ब्याज दर) के नाम पर 2 लाख रुपए तक की जमा सुविधा प्रदान करेगा। एमएसएमई में सरकार के द्वारा दो लाख करोड़ रुपये के कोलेट्रल मुक्त ऋण की अनुमति मिलेगी।7: वित्तीय क्षेत्र- यह साल का आखिरी प्राथमिकता है, जिसके तहत कितना पैसा खर्च होना है और कितना प्राप्त होना है, इसका आंकलन होगा। साथ ही राजकोषीय घाटों का भी मूल्यांकन किया जाता है। इस दौरान वित्त मंत्री के द्वारा कई अहम घोषणा किया गया, जैसे:पुराने सरकारी वाहनों को बदलना।शहरी नियोजन में सुधार।शहरी स्थानीय निकायों को नगरपालिका बॉण्ड प्राप्त करने हेतु पात्र बनाना।पुलिस अधिकारियों हेतु आवास का निर्माण।एकीकृत मॉल का निर्माण।बच्चों और किशोरों हेतु पुस्तकालयों तथा डिजिटल बुनियादी ढाँचे का निर्माण करना।केंद्रीय योजनाओं के पूंजीगत व्यय में योगदान करना।वहीं गौर करने वाली बात यह है कि साल 2023-24 में कुल प्राप्तियाँ और कुल व्यय क्रमशः 27.2 लाख करोड़ रुपए और 45 लाख करोड़ रुपए होने का अनुमान लगाया गया है। साथ ही राजकोषीय घाटा GDP के 5.9 प्रतिशत रहने का अनुमान है। जो अगले वित्तीय वर्ष में कम होकर 4.5% हो

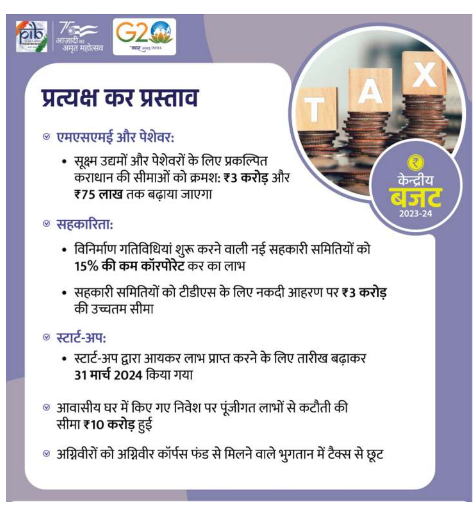

जाएगा।वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के भाषण का अंत में सबने उम्मीदें लगाई थी और बेशक उस उम्मीद पर वो खड़ी उतरी। पिछले कई वर्षों से इनकम टैक्स स्लैब में कोई बदलाव नहीं हुआ था, जिसका असर मध्यम वर्गीय परिवार पर पड़ रहा था। लेकिन लोकसभा चुनाव से ऐन पहले केंद्र सरकार ने बड़ी घोषणा करते हुए टैक्स स्लैब में बदलाव कर दिया। जिससे आम लोग, जो मध्यम वर्ग से संबंध रखते है, उनकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। नए टैक्स स्लैब में सात लाख तक कोई भी टैक्स नहीं देना पड़ेगा। इस घोषणा से सबसे अधिक फायदा नौकरीपेशा लोगों को हुआ। इसके अलावा एमएसएमई को नकदी में छूट दी गई। तीन करोड़ रुपए टर्नओवर वाली कंपनियों को टैक्स से राहत दे दिया गया। अगर इस बजट का विश्लेषण कोई भी करे तो वो आसानी से सकता है कि ये कोई चुनावी बजट नहीं है। हालांकि इस बजट के माध्यम से युवा, महिला, अनुसूचित जाति/जनजाति और किसान को कुछ न कुछ दिया गया है। वहीं खेल क्षेत्रों में कमाल का प्रदर्शन कर रहे खिलाड़ियों के लिए और भविष्य में भारत के खेलों के लिए 1 हज़ार करोड़ रुपए की राशि आवंटित किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के हर वर्ष बजट आने के बाद विपक्ष और बाजार उनकी आलोचना करता है, लेकिन वो अपने ट्रैक से पीछे नहीं हटे हैं। उन्होंने जैसा बजट पहले के सालों में लाया था, ठीक उसी प्रकार का बजट इस साल भी लाया है। जिसमें ना सिर्फ वर्तमान बल्कि भारत भविष्य में कैसा होगा, उसकी तस्वीर मोदी सरकार के बजटों में दिखता है। इसीलिए इस साल शेयर बाजार ने भी मोदी सरकार के बजट को सराहा। ■

— शुभम राजा

सनातन प्रचारिता को दिया पाखंड का नाम

26 साल के धीरेंद्र शास्त्री इस बात का दावा करते हैं कि उन पर हनुमान जी की विशेष कृपा है और उनकी प्रेरणा से वो लोगों की समस्याओं को दूर कर देते हैं।

जैसा की आपको हमने पिछले माह के मैगज़ीन में बागेश्वर बाबा (धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री) के बारे में बताया था। लेकिन उसे पूरा जानने के लिए आपको ये पूरा लेख पढ़ना होगा। बागेश्वर बाबा का पूरा नाम है धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री है, पर ये बागेश्वर धाम महाराज के नाम से जाने जाते हैं। इनमें आस्था रखने वाले उन्हें बालाजी महाराज, बागेश्वर महाराज, धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के नाम से भी बुलाते हैं। इनका जन्म 4 जुलाई 1996 को मध्य प्रदेश में छतरपुर के गड़ा में हुआ था। यानि अगर उम्र देखें तो ये महज 26 साल के हैं। जो लोग धीरेंद्र शास्त्री को बचपन से जानते आए हैं, उनका कहना है कि बचपन से ही ये चंचल और हठीले थे, इनकी शिक्षा गांव के ही सरकारी स्कूल में हुई, हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी की पढ़ाई धीरेंद्र ने पास के ही गंज गांव से की।

इनका किसी बड़े परिवार में जन्म नहीं हुआ था, माता सरोज शास्त्री दूध बेचने का काम करतीं थीं और पिता रामकृपाल गर्ग गांव में सत्यनारायण की कथा सुनाते थे और उससे जो भी कमाई होती थी उसी से परिवार का गुजारा चलाते थे। धीरेंद्र शास्त्री को कथा सुनाने का माहौल बचपन से ही मिला। शायद उसी का नतीजा है। धीरेंद्र जब इस क्षेत्र में आए तो तेजी से तरक्की करते गए। गांव के

> *नागपुर से कथा छोड़कर भागने के आरोप में धीरेंद्र ने पलटवार करते हुए कहा, हाथी चले बाजार, कुत्ते भोंके हजार...*
>
> *- धीरेन्द्र कृष्ण शस्त्री*

लोग बताते हैं कि एक वक्त था जब धीरेंद्र के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहती थी, खाने तक के लाले रहते थे। जैसे तैसे गृहस्थी चलती थी। इनके परिवार के पास रहने के लिए एक छोटा-सा कच्चा मकान था। जिसमें बरसात काटना भी मुश्किल होता था।

घर के हालात को देखते हुए धीरेंद्र शास्त्री ने भी पिता के साथ कथा वाचन शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उन्होंने पिता से मिले संस्कारों को आगे बढ़ाना शुरू किया, अकेले ही आसपास के गांवों में कथा बांचने लगे। पहली बार साल 2009 में इन्होंने भागवत कथा पास के ही गांव में सुनाई थी जिन लोगों ने उन्हें शुरुआती दिनों में देखा है वे यही कहते है कि धीरेंद्र शास्त्री के अंदर कथा कहने की एक अलग शैली थी, जो लोगों को काफी पसंद आती थी। इसलिए उन्हें आसपास के गांवों से भी बुलावा आने लगा और धीरे धीरे ये कथा बांचने में मशहूर होने लगे।

जब थोड़ा नाम हुआ तो धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने सोचा कि लोगों के घर जाने से बेहतर होगा की ऐसी जगह बनायी जाए जहां लोग आ कर उन्हें सुनें। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने अपने गांव गढ़ा में बने भगवान शिव के प्राचीन मंदिर को अपना स्थान बनाया, जिसे आज बागेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। साल 2016 में

गांव वालों के सहयोग से उन्होंने विशाल यज्ञ का आयोजन किया। श्री बालाजी महाराज की मूर्ति की स्थापना हुई। तब से ये स्थान बागेश्वर धाम के नाम से जाना जाने लगा और फिर यहां लोगों का आना जाना शुरु हो गया। बताया जाता है कि श्री बाला जी महाराज के मंदिर के पीछे धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के दादा सेतु लाल गर्ग सन्यासी बाबा की समाधि भी है। कहते हैं कि उनके दादाजी सिद्ध पुरुष थे। वे हर मंगलवार और शनिवार को इस मंदिर में दिव्य दरबार लगाते थे और लोगों की मन की बात जान लेते थे। उस समय भी लोग इसी तरह से अर्जी लगाते थे। खुद धीरेंद्र शास्त्री भी 9 वर्ष की उम्र में दादाजी के साथ इस मंदिर में जाया करते थे। उनसे ही रामकथा सीखी, इसलिए वह अपने दादाजी को अपना गुरु मानते हैं। अपने दादाजी की तरह बागेश्वर धाम महाराज भी हर मंगलवार और शनिवार को दिव्य दरबार लगाने लगे। इस दिव्य दरबार में लोग अर्जी लगाने लगे। लोगों की मन की बात को 3 सवाल और उनका हल एक पन्ने पर लिखने लगे। बागेश्वर धाम सरकार के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इन दिनों सुर्खियों में बने रहे। 26 साल के धीरेंद्र शास्त्री इस बात का दावा करते हैं कि उन पर हनुमान जी की विशेष कृपा है और उनकी प्रेरणा से वह लोगों की समस्याओं को दूर कर देते हैं। सोशल मीडिया पर उनकी कई कथाओं की वीडियो वायरल हैं जिसमें वह लोगों की समस्याओं को सुनते और उनके निवारण करने का दावा कर रहे हैं। ऐसे में अब बागेश्वर धाम बाबा के खिलाफ अंधविश्वास को बढ़ावा देने का आरोप लगा है। साथ ही, महाराष्ट्र के नागपुर शहर में कथा को बीच में छोड़कर भागने का भी उन पर आरोप है। कहा गया, धीरेंद्र शास्त्री ने संस्थान की चुनौती को स्वीकार नहीं किया और वह वहां से भाग गए। इस मामले पर मध्य प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह ने कहा, बाबा को नागपुर की अंधविश्वास उन्मूलन समिति ने शक्तियां प्रमाणित करने की चुनौती दी तो वो वहां से क्यों भाग गए? अगर उनमें सच्चाई है तो धीरेंद्र शास्त्री जवाब दें। और प्रामाणिकता के आधार पर जवाब दें। इन्होंने जिस तांत्रिक जैसी प्रथा को प्रचारित कर रखा है, उसे भी प्रमाणित करें।"

विरोध में...

नागपुर की अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति ने धीरेंद्र शास्त्री पर अंधविश्वास फैलाने का आरोप लगाते हुए पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने कहा, अगर धीरेंद्र के खिलाफ पुलिस कार्रवाई नहीं करेगी तो वो कोर्ट का रुख करेंगे। इस केस पर पलटवार करते हुए धीरेंद्र ने कहा, यह काम धर्म विरोधी लोगों का है। वहीं, नागपुर से कथा छोड़कर भागने के आरोप में धीरेंद्र ने पलटवार करते हुए कहा, हाथी चले बाजार, कुत्ते भोंके हजार... उन पर सवाल उठाने वाले और चमत्कार को चुनौती देने वालों को जवाब देते हुए धीरेंद्र ने कहा, हम सालों से बोल रहे हैं कि न हम कोई चमत्कारी हैं, न हम कोई गुरू हैं। हम बगेश्वरधाम सरकार बालाजी के सेवक हैं।" धीरेंद्र शात्री को कांग्रेस विधायक डॉ गोविंद सिंह ने चुनौती देते हुए कहा कि वह अपनी

शक्तियों को साबित करके दिखाएं। छत्तीसगढ़ के कांग्रेस नेता कवासी लखमा ने भी कहा, वो अगर अपनी शक्तियों को साबित कर देते हैं तो वो राजनीति छोड़ देंगे। वहीं अगर वो नहीं कर पाते हैं तो वो बाबागिरी छोड़ दें। इसके बाद नागपुर के सामाजिक कार्यकर्ता श्याम मानव ने भी बाबा चैलेंज दिया था और कहा कि अगर धीरेंद्र शास्त्री उनके लोगों के मन की बात बता दें तो वो तीस लाख रुपए देंगे। इसके साथ ही पंडित धीरेंद्र शास्त्री पर दंडी सन्यासियों ने भी आरोप लगाते हुए कहा कि, वो ढोंगी और पाखंडी हैं।

समर्थन में...

पंडित धीरेंद्र शास्त्री के बचपन के मुस्लिम दोस्त ने उनके समर्थन में आवाज उठाई है। उनके दोस्त शेख मुबारक ने दावा कर कहा कि, धीरेन्द्र का बचपन गरीबी में गुजरा है और उन्होंने 41 दिनों तक जंगल में तपस्या की थी। नागपुर में पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के समर्थन में प्रदर्शन शुरू हो गया है। विश्व हिंदू परिषद के लोगों ने धीरेंद्र शास्त्री के समर्थन में मार्च निकाला। वहीं, योग गुरु रामदेव भी उनके समर्थन में उतरे। उन्होंने कहा, कुछ पाखंडी धीरेंद्र पर टूट पड़े हैं और पूछ रहे हैं बालाजी, हनुमानजी की कृपा क्या है। ये तो धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री को लेकर कुछ लोगों और राजनीती के कुछ नेताओं का मत था। जिसपर चर्चा लगातार चलती आरही है। लेकिन इन सभी बातों को हटा कर आप से सवाल है कि आप क्या सोचते है? क्या सच में धीरेन्द्र शास्त्री के ऊपर भगवान हनुमान जी की कृपा है! या वो ढोंगी है? ऐसे तो हम इंसान किसी चीज को जब तक देख ना ले तब तक मानते नहीं या उस बात का जब तक कोई साक्ष्य ना हो। आप इसपर विचार जरूर करे। ■

प्रियंका सिंह

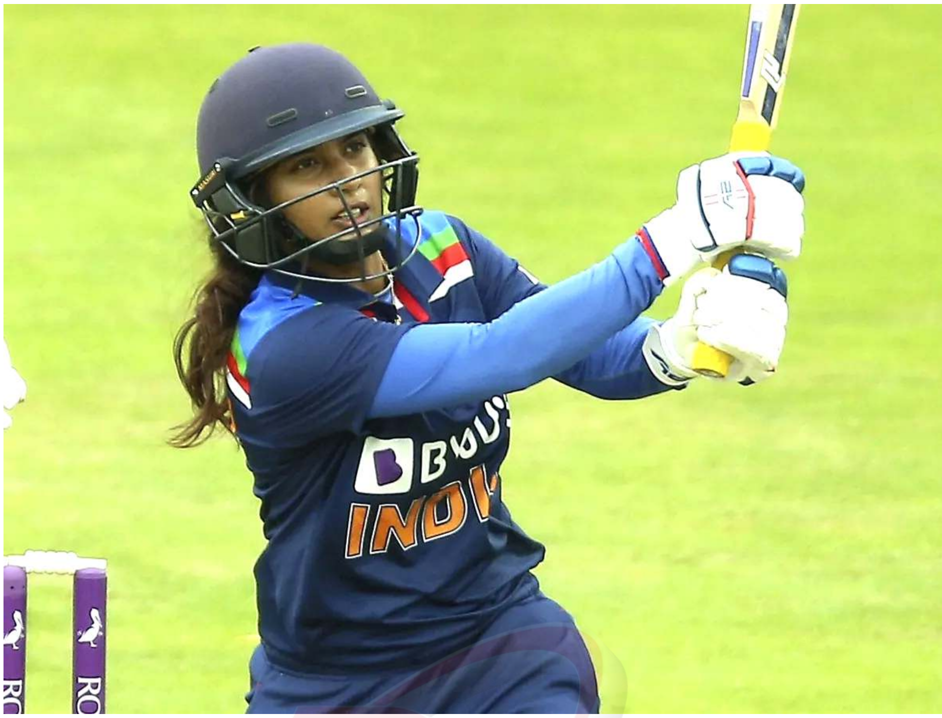

महिला क्रिकेट की पहल

बीसीसीआई 25 मार्च 2022 को 6 महिला टीमों के लिए टूर्नामेंट का प्रस्ताव मान लिया। लेकिन बाद में 6 महिला टीमों के बजाए 5 टीमों ने ही इस आईपीएल के लिए हिस्सा लिया।

क्रिकेट एक ऐसा टॉपिक है जिसके बारे में हर कोई बात करना चाहता है। क्रिकेट के साथ दिलचस्पी जहां पुरुषों में दिखाई देती है वहीं महिलाएं भी इसमें कम नहीं है। बहुत सी महिलाओं को क्रिकेट देखना और खेलना पसंद होता है लेकिन लोग इस बात पर शायद आज भी हस्ते है की लड़की क्रिकेट खेलेंगी? जब लड़कियों ने क्रिकेट खेलना शुरू किया था तब लोग उनके खेल को मजाक लेते थे। लेकिन लड़कियों ने अपने पहले मैच से लोगों को दिखा दिया की जो वह सोचती है, जिसके वह सपने देखती है वो हासिल कर सकती है। और अब कोई ये नहीं कह सकता की लड़कियां कुछ नही कर सकती। एक तब का समय था जब लोग लड़कियों का मैच नहीं देखना चाहते थे। लेकिन अब आज का दिन जब लोग एक टक लगा कर लड़कियों का मैच देखते है।

जब बीसीसीआई ने पहली बार महिला आईपीएल के लिए भरी हामी...

लड़कियों ने जब बहुत से टूर्नामेंट मैच खेल लिए उसके बाद उन्हें आईपीएल खेलने की चाहत हुई जिसके बाद उन्होंने बोर्ड के सामने अपनी बात रखी लेकिन बीसीसीआई ने उनकी बात नहीं सुनी। लेकिन लड़कियों ने अभी हार नहीं मानी थी। उन्होंने बार-बार इस बात को बीसीसीआई के सामने रखा। और आखिर कार वो दिन आ ही गया जब बीसीसीआई ने भी महिला आईपीएल के लिए हां कह दिया। बीसीसीआई 25 मार्च 2022 को 6 महिला टीमों के लिए टूर्नामेंट का प्रस्ताव मान लिया। लेकिन बाद में 6 महिला टीमों के बजाए 5 टीमों ने ही इस आईपीएल के लिए हिस्सा लिया। जिसमें मुंबई इंडियंस, गुजरात जायंट्स, लखनऊ वॉरियर्स, रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर और दिल्ली कैपिटल्स की टीमें शामिल हुई। वहीं इन महिला टीमों पर 13 फरवरी 2023 को महिला आईपीएल का ऑक्शन किया गया। जिसमें महिला आईपीएल के पहले संस्करण के लिए खिलाड़ियों पर बोली लगाई गई। जिसमें कुल 90 खिलाड़ियों पर पैसों की बौछार की गई। ईएसपीएनक्रिकइन्फो की रिपोर्ट में ऑक्शन से पहले बताया गया था कि, हर टीम को ऑक्शन पर्स में 12 करोड़ रुपए मिलेंगे। हर फ्रेंचाइजी ने अपनी टीम में कम से कम 15 से 18 खिलाड़ी खरीदे थे। जिसमें विदेशी महिला खिलाड़ी भी शामिल थीं।

> *"एक रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि 22 मैचों वाले डब्ल्यूपीएल में पांच दिन मैच नहीं खेले जाएंगे। एलिमिनेटर 24 मार्च को सीसीआई में है और फाइनल 26 मार्च, रविवार को डीवाई पाटिल स्टेडियम में होगा।"*
>
> *- ESPNcricinfo*

अडानी स्पोर्ट्सलाइन प्राइवेट के माध्यम से अडानी समूह को 1289 करोड़ रुपए की उच्चतम बोली के साथ गुजरात जायंट्स नाम की अहमदाबाद फ्रेंचाइजी मिली। और इंडियाविन स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटेड ने 912.99 करोड़ रुपए की बोली के साथ मुंबई फ्रेंचाइजी

DEFENDER मासिक पत्रिका

का अधिग्रहण किया। वहीं रॉयल चैलेंजर्स स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटेड, जेएसडब्ल्यू जीएमआर क्रिकेट प्रा. लिमिटेड और कैपरी ग्लोबल होल्डिंग्स प्रा. लिमिटेड ने शेष तीन टीमों, बैंगलोर, दिल्ली और लखनऊ को क्रमशः 901 करोड़ रुपए, 810 करोड़ रुपए और 757 करोड़ रुपए की बोलियों के साथ जीता। वायकॉम18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड ने 2023-2027 के लिए डब्ल्यूपीएल के मीडिया अधिकारों की बोली जीती थी। वायकॉम18 ने 951 करोड़ रुपए की बोली के साथ अधिकार हासिल किए, जो प्रति मैच 7.09 करोड़ रुपए के बराबर है।

ICC का पहला अंडर 19 मैच

आईसीसी अंडर-19 के बारे में बात करने से पहले आपको उसके बारे में समझाना चाहेंगे। आईसीसी अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप एक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट है जिसका आयोजन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा राष्ट्रीय अंडर-19 टीमों द्वारा किया जाता है। 1988 में यूथ वर्ल्ड कप के रूप में पहली बार चुनाव लड़ा गया, 1998 तक इसका दोबारा मंचन नहीं किया गया। तब से, विश्व कप को एक द्विवार्षिक कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया जाता है। टूर्नामेंट के पहले संस्करण में केवल आठ प्रतिभागी हुआ करते थे, लेकिन बाद के संस्करण में 16 टीमें शामिल कर दी गई। भारत ने इस टूर्नामेंट से पांच बार विश्व कप जीता है। ऑस्ट्रेलिया ने तीन बार, पाकिस्तान ने दो बार और इंग्लैंड ने दक्षिण अफ्रीका, बांग्लादेश और वेस्टइंडीज ने एक-एक बार जीत हासिल की है। आईसीसी अंडर-19 का पहला महिला मैच 14 जनवरी को शुरू हुआ और टीम ने अपना पहला आईसीसी अंडर-19 टी20 महिला वर्ल्ड कप जीत भी लिया। टीम इंडिया ने टी 20 महिला वर्ल्ड कप को इंग्लैंड को 7 विकेट से हराकर अपने नाम किया था। दोनों टीमों के बीच वर्ल्ड कप का फाइनल साउथ अफ्रीका के पोचेस्ट्रम में खेला गया था। वर्ल्ड कप के फाइनल में प्लेयर ऑफ द मैच टिटासू साधू को मिला। इस मैच में 16 महिला टीमें थी।

भारत की तरफ से महिला टीम को शिफाली वर्मा कप्तानी कर रहीं थीं। इस मैच में कुल 41 मैच खेले गए थे। आईसीसी ने इंग्लैंड के दो बल्लेबाजों को पेवेलियन भी भेजा। हम यहां पर भारतीय टीम में शामिल सभी *15 खिलाड़ियों के बारे में बता रहे कि इस वर्ल्ड कप को देश के नाम करने में कितना योगदान रहा।*

- *शेफाली वर्मा*

यह भारत की सीनियर विमेंस टीम की ओपनर है। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में टीम की कप्तानी शेफाली को सौंपी गई। इन्होंने 2019 में सीनियर विमेंस टीम के लिए डेब्यू किया था। ये अभी तक सीनियर टीम की तरफ से 21 वनडे और 51 टी-20 खेल चुकी हैं। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में शेफाली ने 7 मैचों में 172 रन बनाए। इसके साथ ही इन्होंने 4 विकेट भी अपने नाम किया।

- *श्वेता सेहरावत*

श्वेता टीम इंडिया की उपकप्तान राइट हैंड बैटर है। इन्होंने इस पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया। वह इस वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा 297 रन बनाने वाली रही। इन्होंने

अपनी शानदार बैटिंग के बदौलत टीम इंडिया को कई अहम मैच जिताए हैं। वर्ल्ड कप के पहले मैच में उन्होंने साउथ अफ्रीका के खिलाफ 92 रन की नॉटआउट पारी खेली थी।

- *ऋचा घोष*

शेफाली वर्मा की तरह ही ऋचा भी सीनियर टीम की तरफ से कई मुकाबले खेल चुकी है। 19 साल की ऋचा वेस्ट बंगाल के सिलीगुड़ी से आती है। जिन्होंने सीनियर टीम की तरफ से 17 वनडे और 30 टी-20 इंटरनेशनल मैच खेले हैं। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में ऋचा ने 93 रन बनाए।

- *गोंगडी त्रिषा*

त्रिषा 12 साल की उम्र से क्रिकेट खेल रही है। 17 वर्ष की त्रिषा तेलंगाना के बागराचलम से ताल्लुक रखती है। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में त्रिषा ने कुल 116 रन बनाएं। इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए फाइनल में 24 रन की अहम पारी खेली।

- *सौम्या तिवारी*

मध्य प्रदेश के भोपाल से ताल्लुक रखने वाली 17 वर्षीय सौम्या तिवारी बैटिंग ऑल राउंडर है। वह टीम के टॉप ऑर्डर में बैटिंग करती है। सौम्या 8 साल की उम्र से ही क्रिकेट खेल रही है। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में सौम्या ने कुल 84 रन बनाएं। फाइनल में विनिंग रन उन्होंने ने ही बनाया।

- *सोनिया मेंधिया*

18 साल की सोनिया मेंधिया हरियाणा से ताल्लुक रखती है। वह तेज स्ट्राइक रेट से बैटिंग करने के लिए जानी जाती है। बीच के ओवरों में वह सटीक लाइन लेंथ पर बॉलिंग भी कर लेती है। इस ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में उन्होंने 11 रन बनाएं।

- *रिषिता बसु*

रिषिता भारतीय टीम की विकेटकीपर है। 18 साल की रिषिता बसु पश्चिम बंगाल के हावड़ा से आती है। इस वर्ल्ड कप में उन्होंने 25 रन बनाए। टीम में ऋचा घोष के बाद वह दूसरी विकेटकीपिंग ऑप्शन है।

- *सोनम यादव*

ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में अपनी गेंद से बल्लेबाजों को चौंकाने वाली सोनम यादव उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद की रहने वाली है। यह महज 15 साल की है। इन्होंने इस वर्ड कप में 5 विकेट अपने नाम किया। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप के फाइनल में इंग्लैंड का आखिरी विकेट उनकी गेंद पर ही आया था।

- *मन्नत कश्यप*

पटियाला की रहने वाली 19 साल की मन्नत कश्यप टीम इंडिया में ऑलराउंडर हैं। इसके साथ वह लेफ्ट आर्म बॉलिंग करती है। इस ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में उन्होंने 9 विकेट अपने नाम किया।

- *अर्चना देवी*

उत्तर प्रदेश के कानपुर से ताल्लुक रखने वाली 18 वर्षीय अर्चना देवी टीम इंडिया की फर्स्ट चॉइस ऑफ स्पिनर है। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप के फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ खेलते हुए उन्होंने 2 विकेट अपने नाम किया। इसके साथ ही इस मैच में इन्होंने एक शानदार कैच भी लपका था। इस वर्ल्ड कप में इन्होंने 8 विकेट अपने नाम किया।

- *पार्श्वी चोपड़ा*

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर की रहने वाली पार्श्वी चोपड़ा ने इस वर्ड कप में टीम इंडिया के लिए सबसे ज्यादा झटके। लेग स्पीनर पार्श्वी चोपड़ा ने ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप में 11 विकेट अपने नाम किया। यह टीम इंडिया की सबसे सफल गेंदबाज रही।

- *टिटास साधू*

पश्चिम बंगाल के चिनसुरा से ताल्लुक रखने वाली 18 साल की टिटास साधू टीम इंडिया में तेज गेंदबाज है। तेज गेंदबाजी करने वाली साधू बेहतरीन लाइन लेंथ और पेस के साथ बॉलिंग करती है। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप के फाइनल में इंग्लैंड का पहला विकेट उन्होंने ने ही झटका था। इस वर्ल्ड कप में उन्होंने 6 विकेट अपने नाम किया।

- *शभनम शकील*

आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम से ताल्लुक रखने वाली 15 साल शभनम शकील भी एक तेज गेंदबाज हैं। इनकी तेज गेंदबाजी के लिए ही इन्हें टीम इंडिया में शामिल किया गया। ICC अंडर-19 टी20 विमेंस वर्ल्ड कप के दो मैच में उन्हें गेंदबाजी का मौका मिला। जिसमें उन्होंने एक-एक विकेट झटके। ■

प्रियंका सिंह

DEFENDER मासिक पत्रिका

विपक्षी एकता की कोशिश

2024 में दिखेगी विपक्षी एकता?

पिछले दो आम चुनाव, 2014 और 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समानांतर कोई भी नेता विपक्ष में नहीं टिक पाया। पिछले 9 वर्षों में कई राज्यों में नरेंद्र मोदी को शिकस्त देने के लिए गंठबंधन भी बनाया गया, लेकिन फिर भी विपक्ष को हार मिली। एक बार फिर भारत आम चुनाव के ओर अग्रसर हो रहा है। मात्र एक वर्ष ही लोकसभा चुनाव को बचा हुआ है। विपक्ष में देशव्यापी गठबंधन बनाने की कोशिश भी होते दिख रही है। हालांकि विपक्ष में प्रधानमंत्री पद के दावेदारी को लेकर होड़ लगी हुई है। कांग्रेस जहाँ राहुल गांधी को राष्ट्रीय राजनीतिक मंच पर स्थापित करने के लिए "भारत जोड़ो यात्रा" कर रही है, तो वहीं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भी उनकी पार्टी जदयू, प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में पेश कर रहा है। तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता और तेलंगाना के मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव खुद को प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में पेश करने लगे हैं। उन्होंने तेलंगाना राष्ट्रीय समिति का नाम बदल कर भारत राष्ट्र समिति रख दिया है। वहीं बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी इस रेस में दौड़ती दिखाई दे रही हैं। इन लोगों के अलावा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी पीछे नहीं रहना चाह रहे हैं। पंजाब में सरकार बनाने और गुजरात की राजनीतिक सीमा के अंदर दाखिल होने के बाद उन्हें राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दे दिया गया है, अब उनकी महत्वाकांक्षा प्रधानमंत्री पद के लिए साफ दिखने लगा है। प्रधानमंत्री मोदी के ख़िलाफ़ विपक्ष के कमजोर होने का सबसे बड़ा कारण यही है, की सभी राजनीतिक दल एक मंच पर आ सकते हैं। अगर एक मंच पर कहीं दिख भी जाये तो सबकी अपनी अलग महत्वाकांक्षा होती है, जो कहीं न कहीं दिख ही जाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्तर का नेता ना ही देश में है और ना ही विश्व में। समय-समय पर आए सर्वेक्षणों ने इस बात को प्रमाणित किया है। कुछ दिनों पहले ही अमेरिकी फर्म "मॉर्निंग कंसल्ट" के द्वारा किये गए सर्वेक्षण में प्रधानमंत्री मोदी को 78 प्रतिशत रेटिंग के साथ वैश्विक नेताओं की सूची में पहले नम्बर पर रखा है। इसके अलावा जनवरी महीने में आया इंडिया टुडे सी वोटर के सर्वे में प्रधानमंत्री मोदी 70 प्रतिशत से अधिक रेटिंग के साथ देश के सबसे प्रभावशाली नेता के रूप में सामने आई है। और खास बात यह है कि पिछले सालों की तुलना में देखे तो प्रधानमंत्री मोदी और अधिक चर्चित हुए हैं। अब जब बतौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 9 साल का कार्यकाल पूर्ण हो चुका है, लेकिन फिर भी लोकप्रियता ना सिर्फ बनी हुई है, बल्कि लगातार बढ़ रही है, तो ये विपक्ष के लिए जरूर चिंता का विषय होगा। इस

आलेख में हम आपको बताएंगे कि कैसे सभी कोशिशों के बाद भी विपक्ष एकजुट नहीं हो पा रहा है। और जो यात्राओं का दौर भारतीय राजनीति में जीवंत हुआ है, उससे कितना फायदा विपक्ष को भविष्य में होगा?"यात्रा" के

सहारे विपक्षभारत में शायद ही किसी शख़्स ने आज से कुछ वर्षों पहले तक सोचा होगा कि गांधी परिवार का सदस्य भारत यात्रा पर निकलेगा। आज़ादी के बाद भारत में कांग्रेस और खास कर गांधी-नेहरू परिवार ने अधिकत्तर समय शासन किया है। लेकिन जब से राष्ट्रीय राजनीति में बतौर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पदार्पण हुआ है, तब से कांग्रेस की स्थिति लगातार दयनीय होती जा रही है। वर्तमान में मात्र तीन राज्यों में ही कांग्रेस खुद के दम पर सरकार चला रही है, उसमें राजस्थान, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश शामिल है।

> *"साल 2019 लोकसभा चुनाव के वक़्त "चौकीदार चोर है" जैसे नारे उल्टा कांग्रेस के हार में आखिरी कील के रूप में काम किया था। इसके अलावा पिछले लोकसभा चुनाव से पहले भी कांग्रेस ने कोशिश किया था कि सभी पार्टी एक मंच पर आए, लेकिन वो सफल नही हो पाए। जिसका परिणाम 2019 लोकसभा चुनाव में साफ दिखाई दे दिया था।"*

अब आम चुनाव के महज एक साल बचे हुए हैं, इससे पहले मल्लिकार्जुन खड़गे को कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर, इस आरोप से तो दूर हो गई कि कांग्रेस पर एक परिवार का एकाधिकार है। लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता में आने के लिए आम लोगों का भरोसा होना जरूरी है। इसीलिए कांग्रेस के द्वारा राहुल गांधी के अगुवाई में "भारत जोड़ो यात्रा" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राहुल गांधी ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक पैदल यात्रा किया। यह यात्रा कुल 136 दिनों तक चली, 75 ज़िले, 12 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों से गुजरी इस यात्रा की लंबाई कुल 3500 किलोमीटर थी। इस दौरान लोगों

का समर्थन जरूर देखने को मिला, लेकिन विपक्ष के कई दलों ने इस यात्रा से कन्नी काट ली। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, सपा प्रमुख अखिलेश यादव, बसपा सुप्रीमो मायावती, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत कई दिग्गज नेताओं ने इस यात्रा में शामिल होने से मना कर दिया। कांग्रेस के द्वारा इस यात्रा को राजनीतिक नहीं बल्कि समाज को जोड़ने की यात्रा कही जा रही थी। लेकिन इस यात्रा का मकसद राहुल गांधी को 2024 लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रूप में स्थापित करना था। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान लगे बैनरों-पोस्टरों से लेकर सोशल मीडिया तक, कांग्रेस के बड़े नेताओं से लेकर छोटे कार्यकताओं तक, बस राहुल गांधी के तारीफ में क़सीदे पढ़े जा रहे थे। यही कारण था कि वो पार्टी इस यात्रा में नहीं जुड़ी, जिन्हें लगता है कि वो भविष्य में राष्ट्रीय राजनीति का अहम हिस्सा बन सकते हैं। वहीं एक और यात्रा बिहार में चल रही है। भाजपा से गठबंधन तोड़ने के बाद वापस राजद के साथी बनने वाले नेता नीतीश कुमार आजकल "समाधान यात्रा" पर निकले हुए हैं। इस दौरान वो राज्य के विभिन्न हिस्सों में जाकर लोगों की समस्याओं को सुन रहे हैं, लोगों से बात कर रहे हैं। हालांकि राजनीतिक विश्लेषकों की माने तो नीतीश कुमार की गिरती लोकप्रियता के वजह से यह समाधान यात्रा करना पड़ रहा है। नीतीश कुमार के लगातार गठबंधन के साथी बदलने के कारण, उनके विश्वसनीयता पर संदेह पैदा किया जा रहा है, वहीं इतने वर्ष सत्ता में रहने के बाबजूद भी कई समस्याएं बिहार में सबके सामने है। इसलिए यह यात्रा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा किया जा रहा है। वहीं, दूसरी तरफ जदयू और राजद के तरफ से लगातार नीतीश कुमार को प्रधानमंत्री

पद का उम्मीदवार बना कर पेश कर रही है। हालांकि, नीतीश कुमार स्वयं से इन सब अटकलों को जरूर खारिज कर देते हैं। लेकिन जदयू कार्यालय के बाहर लगे पोस्टरों को देख कर यह साफ प्रतीत होता है कि नीतीश कुमार क्या चाहते हैं? वहीं बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, तेलंगाना के मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का भी महत्वकांक्षा विभिन्न मंचो से दिख चुका है।

अब स्थिति अगर यही रही तो आने वाले समय में नरेंद्र मोदी को इससे और अधिक फायदा होगा। और अगर नरेंद्र मोदी को सत्ता में आने से रोकना है तो विपक्षी दलों को साथ आकर चुनावी रण में उतरना होगा। हालांकि, फिर भी परिणाम विपक्ष के पक्ष में आये, यह तय नहीं है क्योंकि 2019 लोकसभा चुनाव के वक़्त उत्तर प्रदेश में सपा और बसपा का गठबंधन नरेंद्र मोदी के सुनामी के आगे साफ हो गई थी।

अब विपक्ष का साथ आना इसीलिए भी असंभव लग रहा है कि कुछ दलों में वैचारिक मतभेद बहुत ज्यादा है। जैसे ममता बनर्जी और लेफ्ट का बंगाल में मतभेद का स्तर बहुत ज्यादा है। वही, कांग्रेस और लेफ्ट केरल में एक दूसरे के विरोधी है। इसीलिए विपक्ष का एकसाथ आकर चुनाव लड़ना इतना आसान नहीं हैं, जितना नेताओं के द्वारा टीवी चैनलों पर बैठ कर बोल दिया जाता है। और विपक्ष के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि मोदी के सामने कोई करिश्माई और सक्षम नेता को खड़ा करना।मुद्दा विहीन विपक्षविपक्ष के एकसाथ ना आने का कारण राजनीतिक "मुद्दा" भी है। भाजपा अपने वैचारिक मुद्दा-राष्ट्रवाद और हिंदुत्व पर अडिग है। साल 1980 में जब भाजपा का गठन हुआ तब से लेकर अबतक अपने मूल विचार से भाजपा ने कोई समझौता नहीं किया है। लेकिन विपक्ष में यह बात नहीं है। जो कांग्रेस भगवान राम के अस्तित्व को नकारती थी, उसी कांग्रेस के नेता राहुल गांधी मंदिरों का भ्रमण कर रहे हैं। इस देश में मुस्लिम तुष्टिकरण हो या जातिगत राजनीति, कई राजनीतिक दलों का नींव इन्हीं मुद्दों पर टिका हुआ था लेकिन साल 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय राजनीति में पदार्पण के बाद सभी समीकरण ध्वस्त हो गया। भाजपा ने धारा 370, राममंदिर और तीन तलाक़ जैसे वैचारिक मुद्दों को सत्य करके

दिखाया। इन मुद्दों के समर्थन में कई विपक्षी दल है लेकिन कई सरकार के इस फैसले का विरोध कर रहे हैं। उदाहरण स्वरूप, धारा 370 हटाने को लेकर जहाँ एकतरफ नीतीश कुमार, अरविंद केजरीवाल समर्थन में हैं तो वहीं कांग्रेस और राजद इसके खिलाफ है। भले कांग्रेस के द्वारा खुलेआम इसका विरोध नहीं किया जा रहा है लेकिन दबे जुबान में कई बार सार्वजनिक मंचों से धारा 370 हटाने का विरोध किया है। इस वक़्त देश में राष्ट्रवाद और हिंदुत्व को लेकर जनसमूह में स्वीकार्यता बढ़ रहा है। इसलिए विपक्ष के कई दल अब अपने विचार से समझौता करके इन सब मुद्दों पर हामी भर रही है। लेकिन विपक्ष में कई दल ऐसे भी हैं, जो लगातार इन दोनों मुद्दों का विरोध कर रहे हैं और इसे समाज को तोड़ने वाला बता रहे हैं। उदाहरण के लिए, अभी कुछ दिन पहले ही सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने रामचरितमानस के खिलाफ विवादित टिप्पणी किया था। उनके समर्थन में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जरूर किया था लेकिन कांग्रेस ने इसका विरोध किया था। और भी कई ऐसे मुद्दे हैं, जिसपर मतभेद होने के वजह से विपक्ष एक जगह बैठ नहीं पा रहा है। साल 2024 लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने 10 साल के कार्यकाल के बही खातों के साथ चुनावी रण में उतरेंगे। तो वहीं विपक्ष बेरोजगारी और महँगाई जैसे मुद्दों के साथ मैदान में उतरेगी। लेकिन अभी भी नरेंद्र मोदी के सत्ताविरोधी लहर देश के लोगों में देखने के लिए नहीं मिल रही है। देश के विभिन्न सर्वेक्षणों में भी मोदी के आसपास कोई नेता नहीं दिखाई देता है। विपक्ष में कोई भी ऐसी पार्टी नहीं हैं, जिसका प्रभुत्व पूरे देश में हो। जब से क्षेत्रीय दलों का उभार हुआ है, कांग्रेस भी सिमट कर कुछ सीटों पर सीमित हो गई है। वहीं "आम आदमी पार्टी" भी देश में अपने संगठन को विस्तार करने में लगी हुई है। इस साल "आप" राजस्थान विधानसभा चुनाव में पूरे दम से लड़ने का मन बना रही है। वहाँ इस वक़्त कांग्रेस की सरकार है, जो अंतर्कलह से जूझ रही है।

हालांकि अभी लोकसभा चुनाव में एक साल बांकी है। लेकिन 130 करोड़ के जनसंख्या वाले लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक वर्ष बहुत कम होता है। इसलिए अगले कुछ महीनों में होने वाले विधानसभा चुनाव ने यह लगभग तय हो जाएगा कि क्या विपक्ष एकजुट हो पाती है या 2024 लोकसभा चुनाव में मोदी का काट कोई नहीं बन पाएगा? ■

— शुभम राजा

eduTantra®
EDUCATION KA NAYA MANTRA

DISTANCE EDUCATION

Distance Learning

Online Education

Key Features

Learning Management System
Impactful Video Classes
Wide Range Of Programs
Easy Admission Process
Distance Learning
Course Materials
Friendly Interface
Expert Teachers

NOW OPEN FOR REGISTRATION

Academic Collaboration with Top leading Universities

Subharti University
Suresh Gyan Vihar University
Lovely Proffessional University
NMIMS University

We change the way of Learning!

- *Talented & Experienced Educators.*
- *Doubt Sessions for your queries.*
- *Live Interaction With our Educators.*
- *Powerful video Lecture and Course Material.*
- *Distance Learning Solutions for Tomorrow.*
- *Join the Plus Community In LMS to Uplift your Carrier.*
- *Learning Management System (LMS) Platform to learn new skills.*

+91 704-235-0324
info@edutantra.in

Have Question ?
Get in touch!

BOLLYWOOD तड़का

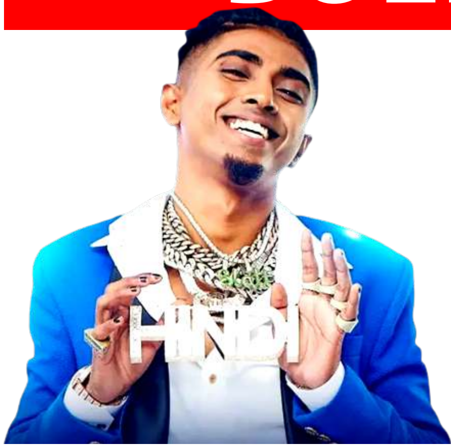

शिव ठाकरे और प्रियंका को पीछे छोड़ MC Stan बने Bigg Boss 16 के विनर

बिग बॉस सीजन 16 एक ऐसे शख्स के नाम हुई जिसकी उम्मीद भी नहीं थी। इस बार हुए बिग बॉस सीजन 16 में एमसी स्टैंन विजेता घोषित किये गए। 23 साल के एमसी स्टैंन ने प्रियंका चौधरी और शिव ठाकरे को पीछे छोड़ बिग बॉस 16 की ट्रॉफी अपने नाम की। बिग बॉस सीजन 16 के फाइनलिस्ट में एमसी स्टैंन के अलावा प्रियंका चौधरी, शालीन भनोट और शिव ठाकरे के साथ अर्चना गौतम भी थी। बता दें कि एमसी स्टैंन का असली नाम अल्ताफ शेख है। इसके अलावा एमसी स्टैंन लोगों के बीच टूपक के नाम से भी मशहूर हुए। इन्हें बचपन से ही रैपर बनने का शौक था। इन्होंने अपने शौक को करियर बनाते हुए इस फील्ड में अपनी जगह बनाई। आज एमसी स्टैंन एक शानदार रैपर ही नहीं बल्कि म्यूजिक कंपोजर और सॉन्ग राइटर भी है। एमसी स्टैंन को असली पहचान 2018 में रिलीज हुई वाटा है से मिली थी। एमसी स्टैंन ने अपनी पहचान कम उम्र में खुद के बलबूते पर बनाई है। इन्होंने महाराष्ट्र के पुणे में एक मुस्लिम गरीब परिवार में 30 अगस्त 1999 को जन्म लिया था। ■

मुंबई में इवेंट के दौरान सोनू निगम से धक्का-मुक्की

भारतीय मशहूर सिंगर सोनू निगम और उनकी टीम पर मुंबई में एक कॉन्सर्ट के दौरान हमला किया गया था जिसका वीडियो भी सामने आया था। सोनू निगम के साथ ये हादसा चेंबूर में एक लाइव म्यूजिक इवेंट के दौरान हुआ था। 21 फरवरी का दिन चेम्बूर फेस्टिवल का आखिरी दिन था। जिसमें सोनू निगम को परफॉर्मेंस के लिए बुलाया गया था। लेकिन जब सोनू निगम परफॉर्म कर वापस जा रहे थे, की तभी कुछ लोग सेल्फी लेने के लिए स्टेज पर चढ़े गए, जिसकी वजह से सोनू निगम के एक टीम मेंबर को चोट लग गई और

उसे हस्पताल भेजना पड़ा। जिसके बाद सोनू निगम ने पुलिस में अपना बयान दर्ज कराया। वहीं सूत्रों से पता चला कि उद्धव ठाकरे खेमे के विधायक प्रकाश फाटेरपेकर के बेटे ने अपने साथियों के साथ सोनू निगम पर हमला किया है। जिसमे सोनू को धक्का मारा गया लेकिन सोनू निगम बच गए। ■

'The Kashmir Files' और 'RRR' को मिला दादा साहेब अवॉर्ड

हिंसा पर बनी फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को 21 फरवरी को अवॉर्ड मिला। फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फिल्म होने का 'दादा साहब फाल्के अवॉर्ड' 2023 मिला। 'द कश्मीर फाइल्स' के साथ फिल्म 'आरआरआर' को भी बेस्ट फिल्म होने का 'दादा साहब फाल्के अवॉर्ड' मिला

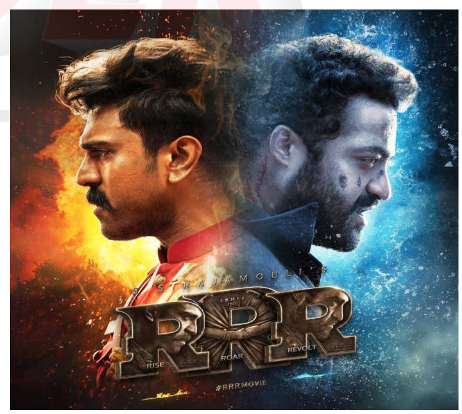

था। 21 फरवरी 2023 को हुए इस अवॉर्ड समारोह में कई फिल्मी हस्तियों ने भी शिरकत की थी। वहीं आलिया भट्ट को गंगूबाई काठियावाड़ी में बेहतरीन अभियन के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का अवॉर्ड मिला। अनुपम खेर, रणबीर कपूर, रेखा, वरुण धवन, रिषभ शेट्टी और कई अन्य को भी अवॉर्ड दिया गया था। ■

BOLLYWOOD तड़का

सीड-कियारा ने जब जैसलमेर की शाम बनाई ख़ास

काफी समय से कियारा और सिद्दार्थ के रिलेशनशिप को लेकर लोग अलग-अलग तरीके के अटकले लगा रहे थे। लेकिन आख़िरकार वो समय भी आ ही गया जब उन्होंने अपने रिश्ते को नाम देने का ऐलान ऑफिसियल कर दिया। कियारा और सिद्दार्थ मल्होत्रा ने 7 फरवरी को कर ली शादी। दोनों क्यूट कपल ने सूर्यगढ़ पैलेस, जैसलमेर में सात फेरे लिए। जैसलमेर के इस शादी के मौहाल में फ़िल्मी दुनिया के बड़े बड़े सितारे भी मौजूद थे। कियारा और सिद्दार्थ ने अपने शादी के कुछ घंटो बाद ही अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपने शादी की तस्वीरें शेयर की और अपने fans का इंतज़ार खत्म किया। fans ने दोनों कपल की तस्वीरें खूब पसंद भी की और शेयर भी। इस बीच, सिद्धार्थ और कियारा का हनीमून प्लान भी सामने आया कि ये कपल हनीमून पर फिलहाल नहीं जायेंगे और वजह है इसका काम को लेकर कमिटमेंट। इसके अलावा एक बड़ी वजह भी थी उनके ना जाने की। दरअसल 7 फरवरी को इन्होने शादी तो कर ली लेकिन इनके कुछ पंजाबी रश्म बाकि थे जिसके लिए इन्हे घर जाना था। वहीं कियारा ने जब तस्वीरें शेयर की तो लिखा की अब हमारी परमामेंट बुकिंग हो गई है। हमे अपने इस शफर के लिए आपके प्यार और ब्लेसिंग की जरूरत है। ■

Shehnaaz Gill का शादी से उठा भरोसा, एक्ट्रेस ने बताया सच

शहनाज गिल कभी सिद्धार्थ शुक्ला को पसंद करती थीं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो दोनों एक दूसरे को डेट रहे थे। इतना ही नहीं शहनाज गिल को सिद्धार्थ के साथ घर भी बसाना चाहती थी। लेकिन साल 2021 में अचानक ही सिद्धार्थ शुक्ला की मौत हो गई जिसके बादल शहनाज गिल का दिल टूट गया। वहीं अब शहनाज गिल को शादी करने में दिलचस्प नहीं है। उन्होंने अपने शो पर कहा, लाइफ में तुम्हें नहीं पता ना कि तुम्हारा फ्यूचर क्या है। तुम्हें हर चीज के लिए तैयार रहना चाहिए। अभी मेरे पास कुछ चीजें हैं

करने के लिए तो मैं कर रही हूं। आगे जाके मैं काम करने की पूरी कोशिश करूंगी। कोशिश करूंगी कि काम मिलता रहे। लेकिन अगर मुझे काम नहीं मिला तो कम से कम मेरे पास इतनी सेविंग तो होनी चाहिए कि मैं भविष्य में पैसों के लिए किसी के आगे हाथ न फैलाऊं। और उस चक्कर में मुझे शादी ना कर लेनी पड़े। मुझे शादी वगैरा में विश्वास नहीं। मुझे अभी बहुत आगे जाना है लाइफ में। लेकिन मुझे है कि मैं अपनी सेविंग रखूं। मेरा ये नहीं कि मैं पैसे उड़ाऊं। मैं सेव करना चाहती हूं। बताते चलें कि शहनाज गिल जल्द ही सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान में नजर आने वाली हैं। इस मूवी से शहनाज गिल अपना बॉलीवुड डेब्यू करने वाली हैं। ■

Kangana Ranaut ने दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड के बहाने नेपोटिज्म पर साधा निशाना, जारी की नई विनर लिस्ट

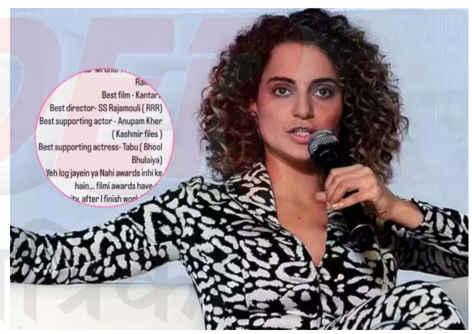

'दादासाहेब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल' बीते माह काफी चर्चा का विषय बना हुआ था। इस इवेंट से जुड़ी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही थी। इस इवेंट में बॉलीवुड के कई जाने-माने स्टार्स नजर आए थे। इवेंट में कई स्टार्स को अवॉर्ड भी दिए गया था। जिसमें आलिया भट्ट से लेकर कई स्टार्स का नाम एक्ट्रेस और एक्टर का नाम शामिल था। लेकिन अवार्ड शो के दौरान 'दादासाहेब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल' में दिए गए अवॉर्ड्स को लेकर कंगना रनौत ने सवाल खड़ा कर दिया। कंगना ने एक बार फिर बॉलीवुड पर निशाना

साधा। और कहा नेपो पैरेंट्स के नाम और कॉन्टेक्ट्स का इस्तेमाल करते है। काम पाने के लिए पापा की चापलूसी करते हैं। अगर कोई सेल्फ मेड स्टार्स इनको टक्कर दे तो उसे बर्बाद करने में लग जाते है। ■

राखी ने क्यों कहा की आदिल ने मारा उनकी माँ को ?

राखी सावंत अपने किसी न किसी हरकत से चर्चा का विषय बनी रहती हैं। कभी सड़को पर तो कभी सोशल मीडिया पर, आये दिन कोई न कोई खबर होती ही है। अभी हाल ही में उनकी पर्सनल लाइफ विवादों में आ गई थी। एक्ट्रेस ने हाल ही में अपने पति आदिल खान दुर्रानी खान के ऊपर धोखा देने के आरोप लगाए था। राखी ने मीडिया के सामने कहा था कि आदिल ने मेरी मां को मारा है। अगर उनका समय पर इलाज हो गया होता तो वो बच जाती। वो मुझे छोड़कर अपनी गर्लफ्रेंड तनु के पास चला गया है। बता दें कि

राखी ने आदिल खान से हाल ही में शादी की थी और मुस्लिम धर्म अपना लिया था। लेकिन शायद उनकी ये शादी भी चलने वाली नहीं थी। शादी के कुछ दिनों बाद इनकी ये शादी भी कंट्रोवर्सी का शिकार बन गई। राखी का कहना था कि उनके पति का किसी दूसरे लड़की के साथ अफयेर है और उसने राखी से शादी सिर्फ फेम के लिए कि थी। ■

- रविना

NATION
Live
खबरों की खबर
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
NATIONAL PRECEPTOR VIVA AWARD 2022
2nd Annual Meet 2022
2nd Annual Meet 2022
JhelamExpress
NATIONAL NEWSPAPER
जनता बता देंगी की आतंकवादी हूँ या बेटा?
बदलते कर्तव्य पथ की तस्वीर
किंग्सवे से राजपथ, राजपथ से कर्तव्य पथ
पूरा इतिहास मन दीक्षित के साथ
LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY
ONLINE & DISTANCE LEARNING
UNIVERSITY REVIEW
UTTAR PRADESH
NEET PG
COUNSELLING 2022
कैसे करें रजिस्ट्रेशन?
M.B.A
IN HEALTHCARE MANAGEMENT
NARSEE MONJEE INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
NONSTOP
आज की बड़ी खबरें
EXCLUSIVE
NONSTOP
आज की बड़ी खबरें
EXCLUSIVE
NONSTOP
आज की बड़ी खबरें
EXCLUSIVE
आज का भारत
हर रविवार
हकीकत से रुबरु
क्या फिर से मोदी ?
चांदनी चौक
चांदनी चौक से निकला गुजराती
बोला मोदी की टक्कर में कोई नहीं
KNOW YOUR SCHOOL
C.R. OASIS Convent Sr. Sec. SCHOOL
Paprawat, Najafgarh, New Delhi
Know Your SCHOOL
N.K. BAGRODIA PUBLIC SCHOOL
Sector - 9, Rohini, Delhi
KNOW YOUR SCHOOL
GYAN SAGAR CONVENT SCHOOL
Rajokri, Delhi
KNOW YOUR SCHOOL
M.L. KHANNA DAV Public School
Dwarka Sec-6, Delhi
KNOW YOUR SCHOOL
K.R.D PUBLIC SCHOOL
Vikas Nagar, Delhi
KNOW YOUR SCHOOL
THE MANN SCHOOL
Holambi Khurd, Delhi
डेरा प्रमुख राम रहीम
रामचरितमानस पर टिप्पणी से अखिलेश
DEFENDER
डिफेन्डर
LET US SAVE THE SINKING SHIP-THE DISTANCE EDUCATION
राजनीति का तीस मार खां शिवराज
लालू के लालटेन की रौशनी में, नितीश का तीर चल गया
DEFENDER
डिफेन्डर
नए साल के रंग
CENTRE FOR EDUCATION ADDER
NATIONAL Preceptor Viva Award 2022

SUBSCIPTION REQUEST

DEFENDER
डिफेन्डर
पहल भारत निर्माण की

Option	Period	Issues	Tick (✓) One	You Pay
1.	1 Year	12 Issues		Rs. 350/-
2.	2 Year	36 Issues		Rs. 900/-
3.	3 Year	60 Issues		Rs. 1500/-

Yes, I would like to subscribe **DEFENDER**

Name : Mr./Mrs.

Address :

Pin

Ph : (O) (R) E-mail :

Plaese find enclosed DD/Pay Order/Cheque No. Drawn on bank

Dated For Rs. Favour of **Jan Media Pub. Pvt. Ltd.** payable at Delhi

Date

Signature

Please mail this form (or photocopy) with your rementance to:

DEFENDER

मुख्य कार्यालय : 29/2, विजय एन्कलेव, डाबरी पालम रोड़, नई दिल्ली-110045

TEL: +91 9971999976 E-MAIL : janmedia.in@gmail.com WEBSITE : janmedia.in

FACEBOOK : www.facebook.com / Nation Live TWITTER : @nationlive

YOUTUBE : www.youtube.com / Nation Live IPTV INSTAGRAM : @nation_live_

DEFENDER

डिफेन्डर

पहल भारत निर्माण की

DEFENDER

मासिक पत्रिका

Add : 29/2, Vijay Enclave, Dabri Palam Road, New Delhi-110045

www.janmedia.in janmedia.in@gamil.com